04 - भाजपा को पवार-उद्धव से बड़ी चुनौती

05 - पाठ्य पुस्तकों में आर्यों का बदलने लगा इतिहास

A Daily News Magazine

इंदौर

मंगलवार, 16 अप्रैल, 2024

06- कलार समाज की कन्या पूजन कार्यक्रम में विधायक खंडेलवाल का...

07- कला की चमक से चमत्कृत करता कला का नन्हा साधक 'आरव नायक'

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 181 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

प्रसंगवश

कौन सा नेता भारत में बेरोजगारी की समस्या का समाधान करेगा

नीलकांतन आरएस

दुनिया भर में हर जगह राजनेता और राजनीतिक रणनीतिकार अब बिल क्लिंटन के एक वाक्य, 'यह मूर्खतापूर्ण अर्थव्यवस्था है' का उपयोग उस सच का वर्णन करने के लिए करते हैं जिसे वे हमेशा से जानते हैं- लोग इस आधार पर वोट देते हैं कि वे जीवन में अपनी संभावनाओं के बारे में कैसा महसूस करते हैं। नई नौकरी पाने या उसमें आगे बढ़ने की क्षमता को ज्यादातर लोग इसी आधार पर मापते हैं। यही कारण है कि, दुनिया भर में राजनेता रोज़गार सृजन पर ज़ोर-शोर से अभियान चलाते हैं। भले ही अक्सर उनका इस पर सीधा नियंत्रण बहुत कम होता है।

एक सामान्य नियम के रूप में, जिस सरकार के बारे में लोगों को लगता है कि वह नौकरी दे रही है तो वे उस सरकार को दोबारा चुनते हैं और जिस सरकार के बारे में लगता है कि उसके शासन काल में नौकरियों कम हुई हैं तो लोग उस सरकार को उखाड़ फेंकते हैं।

आइए कुछ बुनियादी सवाल पूछें. पहला कि पिछले वर्ष या पिछले कुछ वर्षों में कितनी नई नौकरियों का सृजन हुआ है? और उन नौकरियों का सेक्टर के हिसाब से ब्रेक-अप क्या है यानि कि किस क्षेत्र में कितनी नौकरियां पैदा हुई हैं? आदर्श रूप से, विनिर्माण क्षेत्र में ढेर सारी नौकरियां पैदा करने की ज़रूरत होती है। राजनेता और अर्थशास्त्री दोनों इस बात पर सहमत हैं कि लोगों को कृषि श्रम जैसे अनुत्पादक कम वेतन वाले काम से बाहर निकालने का यह एक स्थायी तरीका है। भारत के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के आंकड़ों के आधार पर, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की भारत रोजगार रिपोर्ट 2024 के अनुसार, पिछले वर्ष की तुलना में 2022 में लगभग 90.9 लाख नई नौकरियां पैदा हुईं।

यह आंकड़ा देश में कामकाजी उम्र के सभी नागरिकों के लिए सभी क्षेत्रों में सृजित सभी नौकरियों को शामिल करता है। संदर्भ के लिए, भारत हर साल लगभग 10 से 12 लाख कॉलेज स्नातक पैदा करता है। और लगभग चार गुना लोग जो कभी कॉलेज नहीं गए, वे भी कामकाजी उम्र के हो गए। तो, सृजित कुल नौकरियां उस वर्ष काम करने के योग्य बनने वाले लोगों की कुल संख्या का एक तिहाई और एक चौथाई के बीच है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई कैसे गिनती करता है। कतार में बड़ी संख्या में पिछले वर्षों के बेरोजगार लोग भी शामिल हैं।

अब, उसी ILO रिपोर्ट के अनुसार, 2022 में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में श्रमिकों की संख्या में 120.9 लाख की वृद्धि हुई जो कि 90.9 लाख नई नौकरियों की शुद्ध वृद्धि से अधिक है। भारत ने 2022 में विनिर्माण क्षेत्र में केवल 10.7 लाख नौकरियां जोड़ीं, जो कि कृषि में जोड़ी गई नौकरियों के 10 प्रतिशत से भी कम है! ऐसा लगता है कि देश कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था से औद्योगिक अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के बजाय और भी अधिक कृषि प्रधान बनकर पीछे की ओर बढ़ रहा है।

कृषि, छिपी हुई बेरोजगारी है। इस क्षेत्र में अतिरिक्त रोजगार, अधिकांश भाग के लिए, अन्य क्षेत्रों में नौकरी के अवसरों की कमी को दर्शाता है। लेकिन इससे भी अधिक परेशान करने वाली बात यह है कि युवा लोग बड़े पैमाने पर कृषि क्षेत्र में नौकरियां ले रहे हैं। आमतौर पर, एक समूह के रूप में युवा कार्यकर्ता अधिक शिक्षित होते हैं। ये श्रमिक उद्योग के नए क्षेत्रों में नौकरियां लेते हैं जबकि पुराने श्रमिक कृषि कार्य जारी रखते हैं। इससे भी बुरी बात यह है कि कृषि में नौकरियां लेने वाले युवाओं का यह आंकड़ा 2019 में लगभग 37 प्रतिशत से बढ़कर 2022 में 52 प्रतिशत हो गया। यह डेटा में गिरती उत्पादकता के रूप में दिखाई देता है। यहां तक कि जब सृजित नौकरियों में वृद्धि हुई, तब भी कुल मूल्यवर्धन भी गति नहीं पकड़ रही है। यह कम गुणवत्ता वाली नौकरियों के निर्माण की ओर इशारा करता है, जो अनिवार्य रूप से छिपी हुई बेरोजगारी के समान है। रोजगार सृजन में ठहराव, साथ ही नौकरी की गुणवत्ता में गिरावट, कोई हालिया घटना नहीं है। वास्तव में, यह प्रवृत्ति सदी की शुरुआत से ही सामने आ रही है। उदाहरण के लिए, 2012-2019 के बीच, जिसमें मोदी प्रशासन का पहला कार्यकाल और पिछली सरकार का कार्यकाल दोनों शामिल हैं, देश में कुल नौकरियां सापेक्षिक रूप से स्थिर रहीं। 2012 में नौकरियों की कुल अनुमानित संख्या 4.66 करोड़ थी, 2019 में यह 4.65 करोड़ थी। इन सात वर्षों में, संभावना है कि10 से 15 करोड़ युवा कामकाजी उम्र के हो गए, जबकि शायद ही कोई अतिरिक्त नौकरियां पैदा हुई।

रोज़गार सृजन का एक अन्य महत्वपूर्ण पैमाना यह है कि क्या ये औपचारिक क्षेत्र में नियमित नौकरियां हैं। जब कोई 'नौकरी' शब्द का जिक्र करता है, तो जो छवि आम तौर पर दिमाग में आती है वह किसी वेतनभोगी ऑफिस या फैक्ट्री वाले कर्मचारी की होती है। लेकिन उस तरह का काम सभी नौकरियों के दसवें हिस्से से भी कम है। 2022 और 2023 के बीच, इस श्रेणी की नौकरियों- जिसे पीएलएफएस द्वारा 'रेग्युलर' के रूप में वर्गीकृत किया गया है - का अनुपात वास्तव में कुल नौकरियों की तुलना में घटा है। नौकरियों की एकमात्र श्रेणी जिसमें वृद्धि देखी गई वह थी 'स्व-रोज़गार' और 'अवैतनिक पारिवारिक श्रम'। ये दोनों, फिर से, छिपी हुई बेरोजगारी के रूप हैं और सापेक्ष मिश्रण (Relative Mi&) में उनकी वृद्धि केवल चिंता का विषय है।

चौंकाने वाली बात यह है कि भारत के 71 प्रतिशत युवा एनईईटी श्रेणी में आते हैं - यानी रोजगार, शिक्षा या प्रशिक्षण में नहीं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इनमें से कुछ युवा केवल नौकरी खोजने के लिए काफी घातक कदम उठाते हैं। एक बड़ी बेरोज़गार युवा आबादी, विशेषकर युवा पुरुष, दुनिया भर में क्रांतियों के कारक रहे हैं। उदाहरण के लिए, नरेंद्र मोदी ने प्रति वर्ष 2 करोड़ नौकरियां पैदा करने का वादा किया। हालांकि, वह वादा पूरा नहीं हुआ है।

हालांकि, जब डेटा का विश्लेषण किया गया तो कुछ गंभीर बातें सामने आईं। कुछ दशक पहले तक जिसे भारत के लिए जनसांख्यिकीय लाभांश के रूप में प्रचारित किया गया था, अब उसकी मिठास कम होती हुई दिख रही है। अब हमारी उम्मीद यही है कि किसी भी तरह से बेरोज़गार जनसंख्या की संभावित उत्पादकता के नकारात्मक प्रभावों को कम करने की कोशिश की जाए बजाय इसके क्षमताओं का लाभ लेने की कोशिश करने के।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

गहरी नींद का ताला तोड़कर
एक सपना बड़े सबेरे बाहर आया

सभी नागरिक निकल पड़े हैं
घर से बाहर
सूर्य की तरफ़ हेरते
खड़े हो गये पूरी पृथ्वी पर

उनके भीतर बसा हुआ जल
आंदोलित होकर
उठता जाता अंतरिक्ष में
चला आ रहा बादलों का जुलूस
सबकी आवाज़ें उठ रही गगन में

चमकने लगी बिजलियां
गरजने लगे मेघ
खुलने लगी उजली दिशाएं
किनारों पर ठिठकी खड़ी नौकाएं
पार उतारने लगीं सबको

लोकनेत्री पृथ्वी के संग
सब साथ चले।

- ध्रुव शुक्ल

तिरुवनंतपुरम में बोले मोदी-

कांग्रेस-लेफ्ट का अब सिर्फ नाम बचा

पलक्कड़/तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। प्रधानमंत्री मोदी सोमवार को केरल और तमिलनाडु के दौरे पर थे। दोपहर में तिरुवनंतपुरम अटिंगल पहुंचे। यहां उन्होंने कहा कि लेफ्ट और कांग्रेस का केवल नाम ही बचा है। दोनों का केवल नाम ही बचा है। जनता ने दोनों को रिजेक्ट कर दिया है। केरल की जनता आज इसी पीड़ा से गुजर रही है। आज केरल की चर्चा राजनैतिक हिंसा और अपराधों के लिए होने लगी है। कल दिल्ली में भाजपा ने अपना संकल्प पत्र जारी किया है। भाजपा का संकल्प पत्र यानी मोदी की गारंटी है। मोदी की गारंटी में भारत विश्वस्तरीय संरचना का केंद्र बनेगा। मोदी की गारंटी में भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में गगनयान जैसी स्मरणार्थ उपलब्धि हासिल करेगा। मोदी की गारंटी में पीएम किसान सम्मान निधि का पैसा किसानों को मिलना जारी रहेगा और इन सब के साथ ही गरीबों के लिए 3 करोड़ नए घर भी बनेंगे।

70 साल के ऊपर के हर नागरिक को मुफ्त इलाज की सुविधा मिलेगी। यानी भाजपा के विकास दृष्टिकोण में केरल के हर वर्ग और हर समाज के लिए एक व्यापक रोडमैप मौजूद है। बीजेपी सरकार ने पहले भी देश में स्कैम के 17 हजार करोड़ रुपए लोगों को वापस कराए हैं। को-ऑपरेटिव के पीड़ितों को आश्वासन देता हूं कि स्कैम का पूरा आपको वापस मिले, इसके लिए पूरा ताकत लगा दूंगा। केरल के पर्यटन में काफी संभावनाएं हैं। हम वैश्विक पर्यटकों को अपनी विरासत से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आज केरल की चर्चा राजनैतिक हिंसा और अपराधों के लिए होने लगी है

माफिया को राम नाम सत्य की यात्रा कराते हैं : योगी

नवादा में कहा-यूपी में कुछ जेल गए तो कुछ जहन्नुम चले गए

औरंगाबाद/नवादा (एजेंसी)। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज बिहार के औरंगाबाद और नवादा में दो सभाओं को संबोधित किया। उन्होंने नवादा में कहा कि उत्तर प्रदेश में 7 साल में कोई दंगा नहीं हुआ। कोई कर्फ्यू नहीं लगा। वहां तिनका भी नहीं मिलता। वहां माफिया और अपराधियों को राम नाम सत्य की यात्रा कराते हैं। कुछ जेल गए तो कुछ जहन्नुम चले गए। ये काम भाजपा सरकार ही कर सकती है। इसके पहले योगी ने औरंगाबाद में कहा कि राजद से कोई उम्मीद मत कीजिए। वो सिर्फ परिवार की पार्टी है। लालू यादव को परिवार के आगे कुछ नहीं दिखता, परिवार के लोगों को टिकट देते हैं। विपक्ष ने केवल समस्याएं दीं, मोदी जी ने समाधान दिया। विपक्ष पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस कभी राम मंदिर नहीं बनवा पाती। ना लोगों को मुफ्त राशन दे पाती। योगी ने अखिलेश यादव पर भी निशाना साधा। कहा कि लालू के एक परिवार वाले यूपी में भी हैं। हमने उन्हें बिल्कुल शांत कर दिया है। बीजेपी जो कहती है, करके दिखाती है। यही मोदी की गारंटी है। हमने एक तरफ भगवान राम के लिए भव्य मंदिर बनवाया।

केजरीवाल को सोमवार को लगा डबल झटका

सुप्रीम कोर्ट से तत्काल राहत नहीं और अब हिरासत भी बढ़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की मुश्किलें कम होती नहीं दिख रही हैं। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक को सोमवार को एक के बाद एक दो झटके लगे। पहले सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल की याचिका पर तुरंत सुनवाई से इनकार करते हुए मामले को 29 अप्रैल तक टाल दिया तो करीब आधे घंटे बाद ही राउज एवेन्यू कोर्ट ने उनकी हिरासत अवधि बढ़ा दी। केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 23 अप्रैल तक बढ़ा दी गई है। दिल्ली के मुख्यमंत्री को कथित शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में 21 मार्च को गिरफ्तार किया गया था। एक अप्रैल को कोर्ट ने उन्हें 15 अप्रैल तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया था। सोमवार को उन्हें वर्चुअल माध्यम से स्पेशल जज कावेरी बावेजा की कोर्ट में पेश किया गया। अदालत ने उनकी न्यायिक हिरासत 23 अप्रैल तक बढ़ा दी। कोर्ट से यह फैसला ऐसे समय पर आया जब कुछ ही मिनट पहले दिल्ली के मुख्यमंत्री की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में भी संक्षिप्त सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल की अर्जी पर जल्द सुनवाई से इनकार कर दिया।

टूटे सारे रिकॉर्ड, मतदान से पहले ही 4658,13 करोड़ जब्त

- 75 साल के इतिहास में ईसी ने वसूले सबसे ज्यादा अवैध पैसे

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए प्रचार जोरों पर चल रहा है। देशभर में कुल 7 चरणों में नई सरकार के चुनाव के लिए वोटिंग की जाएगी। 19 अप्रैल को पहले फेज का मतदान होना है। और हर बार की तरह इस बार भी चुनाव आयोग तत्पर है ताकि निष्पक्ष चुनाव हों। अब जानकारी मिली है कि चुनाव आयोग ने लोकसभा चुनावों के अब तक 75 साल के इतिहास में सबसे ज्यादा अवैध पैसे जब्त किए हैं। 2024 के आम चुनाव में धनबल पर नकेल कसने के लिए चुनाव आयोग ने बड़ी मुहिम चला रखी है। आयोग द्वारा शेयर की गई जानकारी के मुताबिक, 1 मार्च 2024 से अब तक हर दिन 100 करोड़ रुपये की जब्ती की गई है। आयोग का कहना है कि मतदान शुरू होने से पहले 4650 करोड़ जब्त किए जा चुके हैं।

मुख्यमंत्री ने दिग्विजय को बताया सबसे बड़ा रामद्रोही

राजगढ़ में कहा-उन्होंने जिंदगीभर वोट के लिए हिंदू-मुस्लिम को लड़ाया

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पूर्व सीएम और राजगढ़ लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी दिग्विजय सिंह को सबसे बड़ा रामद्रोही बताया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिग्विजय सिंह ने जिंदगीभर हिंदू और मुस्लिमों को लड़ाने का काम किया और वोट का रास्ता ढूंढा है। सीएम डॉ. मोहन यादव सोमवार को राजगढ़ में बीजेपी की नामांकन रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा- 'सबसे बड़े रामद्रोही जो हर जगह रंग बदलकर बात कर रहे हैं।' सुसनेर में आकर राम मंदिर और संघ की तारीफ कर रहे हैं। अरे, संघ की इतनी तारीफ करते हो तो आ जाओ शाखा में। स्वागत है आपका। कौन रोक रहा है आपको। आपको केवल वोट लेना है। ये डुप्लीकेट नहीं चलेंगे। असली रंग में आना पड़ेगा। सीएम ने आगे कहा- सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भी आपको इस बात का दुख है कि मंदिर क्यों बन रहा है। आपके मन में पाप है। पूरे हिंदू समाज को अपमानित करते हो। जीवनभर हिंदू और मुस्लिमों को लड़ाने का जवाबदार अगर कोई व्यक्ति है तो एक मात्र व्यक्ति दिग्विजय सिंह है। जिसने हमेशा हिंदू मुस्लिम को लड़ाकर वोट बैंक का रास्ता ढूंढा है। सीएम ने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भगवान राम के मंदिर का भूमिपूजन भी हुआ और भगवान राम के मंदिर का लोकार्पण भी हुआ। अगर किसी को पेट में दर्द हुआ है और राम मंदिर के निमंत्रण को ठुकराया है तो वो एकमात्र पार्टी है कांग्रेस पार्टी।

शिवराज बोले- चुनाव को नॉन सीरियस बना रहे दिग्विजय

पूर्व सीएम शिवराज सिंह ने दिग्विजय सिंह को लेकर कहा- जो आदमी नाटक नौटंकी कर रहे हैं, 384 फॉर्म भरवाऊंगा, चुनाव को नॉन-सीरियस बना रहे हैं। सब कुछ रहते हुए कुछ नहीं किया, वो सांसद बनकर कुछ करेंगे क्या? और फिर कांग्रेस का सांसद, कांग्रेस बची कहां भैया। कांग्रेस खत्म हो गई है। गलत फैसलों के कारण खत्म हो गई है। ऐसे नेताओं के कारण खत्म हो गई है।

कुछ लोग अपने फायदे के लिए ज्यूडीशियरी पर दबाव बना रहे

- 21 रिटायर्ड जजों ने सीजेआई को लिखी चिट्ठी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट्स के 21 रिटायर्ड जजों ने सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ को चिट्ठी लिखी है। जिसमें उन्होंने बताया है कि कुछ लोग सोचे-समझे ढंग से दबाव बनाकर, गलत सूचनाएं और सार्वजनिक रूप से अपमानित करके न्यायपालिका को कमजोर करने की कोशिशें कर रहे हैं। ये लोग ओछे राजनीतिक हित और व्यक्तिगत लाभ के लिए न्यायिक प्रणाली में जनता के विश्वास को कम कर रहे हैं। चिट्ठी लिखने वाले 21 जजों में से 4 सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज हैं। जबकि बाकी 17 राज्यों के हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस या अन्य जज हैं।

महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे का गढ़ मांग रही है भाजपा

9 सीटों पर फंसा है पेंच,नहीं सुलझ रही एनडीए की गुत्थी

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी, शिवसेना और अजित पवार की अगुवाई वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी यानी महायुति अब तक सीट बंटवारा नहीं कर सकी है। खास बात है कि महाराष्ट्र में चुनावी दौर शुरू होने में महज 5 दिनों का ही समय रह गया है। कहा जा रहा है कि तीनों दलों के बीच 9 सीटों पर पेच फंसा हुआ है। इधर, विपक्षी गठबंधन महाविकास अघाड़ी में भी सीट बंटवारे को लेकर कांग्रेस नेताओं में नाराजगी की खबर है। एक रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि महायुति रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग, सतारा, औरंगाबाद, नाशिक, ठाणे, पालघर, मुंबई दक्षिण, मुंबई उत्तर पश्चिम और मुंबई उत्तर दक्षिण को लेकर सहमति नहीं बना पा रही है। अब रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग और सतारा में 7 मई को मतदान होना है, औरंगाबाद में 13 मई और अन्य सीटों पर 20 मई को वोटिंग होगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 40 °c | न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 16 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अयोध्या में रामनवमी पर 20 घंटे दर्शन देंगे रामलला

● सुबह 3.30 बजे से एंट्री, 4 दिन तक बंद रहेंगे वीआईपी दर्शन ● 15 लाख लोग पहुंचेंगे अयोध्या,100 जगह लगाई जाएगी स्क्रीन

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में रामनवमी के दिन रामलला का दरबार श्रद्धालुओं के लिए 20 घंटे खुला रहेगा। मंगला आरती के बाद ब्रह्म मुहूर्त में 3.30 बजे से रामलला के दर्शन शुरू होंगे। श्रद्धालुओं को रात 11 बजे तक मंदिर में प्रवेश कराया जाएगा। दर्शन के बीच रामलला का अभिषेक और श्रृंगार भी चलता रहेगा। इस दिन करीब 15 लाख श्रद्धालुओं के देश-विदेश से अयोध्या पहुंचने का अनुमान है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि रामलला की श्रृंगार आरती सुबह 5 बजे होगी। दर्शन और सभी पूजन पहले जैसा चलता रहेगा। भगवान को भोग लगाने के लिए समय-समय पर थोड़ी देर के लिए पर्दा लगाया जाएगा। अन्य दिनों राम मंदिर में श्रद्धालु 6.30 बजे से रात 9.30 बजे तक दर्शन करते हैं। रामनवमी के दिन राम मंदिर 5 घंटे ज्यादा खुला रहेगा। रामनवमी पर भीड़ उमड़ने के कारण 16 से 19 अप्रैल तक

सुगम दर्शन पास, वीआईपी दर्शन पास, मंगला आरती पास, श्रृंगार आरती पास, शयन आरती पास नहीं बनेंगे। यानी किसी भी तरह के पास जारी नहीं किए जाएंगे। 16 से 19 अप्रैल तक सभी विशेष सुविधाएं निरस्त रहेंगी। ऑनलाइन बुकिंग भी नहीं होगी। पहले से बने पास निरस्त किए जा रहे हैं। चंपत राय ने कहा- रामनवमी को रात 11 बजे के बाद अगर मंदिर के बाहर ज्यादा संख्या में श्रद्धालु रहेंगे, तो समय बढ़ाकर उन्हें दर्शन कराने पर विचार किया जा सकता है। दर्शनों के बाद रामलला को भोग लगाया जाएगा और शयन आरती होगी। शयन आरती के बाद भक्तों को निकास मार्ग पर प्रसाद मिलेगा। श्रद्धालु अपना मोबाइल,जूता-चप्पल,बड़े बैग और प्रतिबंधित सामान जितना दूर रखकर आएंगे,दर्शन में उतनी ही सुविधा होगी। चंपत राय ने कहा- राम मंदिर के प्रवेश द्वार पर ट्रस्ट की ओर से श्रद्धालुओं के लिए हेल्प कैंप बनाया गए हैं।

संक्षिप्त समाचार

आठवां दिवस

महागौरी

महागौरी का अर्थ है – वह रूप जो कि सौन्दर्य से भरपूर है, प्रकाशमान है – पूर्ण रूप से सौंदर्य में डूबा हुआ है। प्रकृति के दो छोर या किनारे हैं – एक मां कालरात्रि जो अति भयावह, प्रलय के समान है, और दूसरा मां महागौरी जो अति सौन्दर्यवान, देदीप्यमान, शांत है – पूर्णत: करुणामयी, सबको आशीर्वाद देती हुईं। यह वो रूप है, जो सब मनोकामनाओं को पूरा करता है।

इजराइल का फैसला, ईरान को हमले का जवाब देंगे

● राष्ट्रपति नेतन्याहू ने फिर बुलाई वॉर कैबिनेट की मीटिंग

तेहरान/तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइल पर ईरान के हमले के बाद रविवार को इजराइली वॉर कैबिनेट की मीटिंग में इस बात पर सहमति बनी है कि ईरान को जवाब दिया जाना चाहिए। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, यह कब और कैसे होगा, इसका फैसला नहीं हो पाया है। दूसरी तरफ, भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने ईरान में मौजूद 17 भारतीयों की रिहाई के लिए ईरानी विदेश मंत्री से बात की। जयशंकर ने यह भी कहा कि दोनों देशों को शांति और कूटनीति के जरिए मसले का हल निकालना चाहिए। दरअसल, शनिवार को ईरान ने इजराइली अरबपति की कंपनी के एक जहाज पर कब्जा कर लिया था। यह कार्गो शिप भारत आ रहा था।

मायावती इंडिया से ज्यादा एनडीए को पहुंचा रहीं नुकसान!

● यूपी की 13 सीटों पर हो सकता है 'खेला'

लखनऊ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सत्ता से बेदखल करने के लिए देश भर के विपक्षी दल एकजुट हो चुके हैं। इंडिया गठबंधन के सहारे विपक्षी दल मोदी नेतृत्व वाले एनडीए को रोकना चाहते हैं। इसी क्रम में बहुजन समाज पार्टी समेत कई दल अकेले दम पर चुनाव लड़ रहे हैं। बसपा अपनी तैयारियों में जुटी हुई है। बसपा इस चुनाव में एकला चलो के रास्ते पर चल कर किसको सबसे ज्यादा नुकसान करेगी, ये बड़ा सवाल बना हुआ है। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि बसपा इंडिया गठबंधन को नुकसान पहुंचा सकती है। लेकिन 4 बार यूपी की मुख्यमंत्री रहीं मायावती ने अपनी शतरंजी चाल से बीजेपी के लिए भी मुश्किलें खड़ी कर दी हैं।

खुश होने का समय! अबकी 'मन' भर बरसेगा मानसून

● सामान्य से बेहतर रहेगा मानसून, मौसम विभाग ने जताया अनुमान

राजस्थान,एमपी समेत 20 राज्यों में अच्छी बारिश,ओडिशा में होगी कम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय मौसम विभाग ने सोमवार को बताया कि इस बार जून से सितंबर तक मानसून सामान्य से बेहतर रहेगा। मौसम विभाग 104 से 110 फीसदी के बीच बारिश को सामान्य से बेहतर मानता है। यह फसलों के लिए अच्छा संकेत है। आईएमडी ने बताया कि 2024 में 106 फीसदी यानी 87 सेंटीमीटर बारिश हो सकती है। 4 महीने के मानसून सीजन के लिए लॉन्ग पीरियड एवरेज 868.6 मिलीमीटर यानी 86.86 सेंटीमीटर होता है। यानी मानसून सीजन में कुल इतनी बारिश होनी चाहिए। इससे पहले 9 मार्च को प्राइवेट वेदर एजेंसी स्काईमेट ने सामान्य मानसून का अनुमान जारी किया था। यानी जून से सितंबर तक 4 महीने में 96 से 104 फीसदी के बीच बारिश हो सकती है। भारत में आमतौर पर मानसून 1 जून के आसपास केरल के रास्ते आता है। 4 महीने की बरसात के बाद यानी सितंबर के अंत में राजस्थान के रास्ते इसकी वापसी होती है। 20 राज्यों में सामान्य से ज्यादा होगी।

प्रियंका की बांदीकुई में जनसभा बोलीं, क्या आप अंधे हो गए हैं

सरकार जो कर रही है करने दीजिए की सोच से आपका नुकसान,हमारा भविष्य तो सुरक्षित है

बांदीकुई (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा कि शुरू में पीएम नरेंद्र मोदी की इच्छा थी कि कुछ करेंगे, लेकिन 10 साल में इतनी बड़ी बातें करने के बाद रोजगार नहीं है, महंगाई बढ़ रही है, वादा पूरा नहीं कर पाए। इसलिए मुझे लगता है कि उनकी बातें हल्की पड़ रही हैं। एक वीडियो देखा होगा कि इनके सांसद अलग-अलग प्रदेशों में कहने लगे हैं कि जब हमारी सरकार आएगी तो हम संविधान को बदलेंगे। मंच पर मोदीजी संविधान की बात करते

हैं, लेकिन अपने लोगों से कहते हैं कि जाओ और बोलो कि संविधान बदलेंगे। प्रियंका सोमवार दोपहर दौसा जिले के बांदीकुई के मुकरपुरा बाइपास पर कांग्रेस प्रत्याशी मुरारी लाल मीणा के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा- चंदा मामा दूर के, खूब खाए पूर के; खुद सोने की थाली में खाए, जनता को टूटी प्याली में खिलाया। प्रियंका गांधी ने कहा कि आस्था का प्रमाण त्याग होता है।

ईसी अफसरों ने की राहुल के हेलीकॉप्टर की जांच

● तमिलनाडु के नीलगिरि में फ्लाइंग स्क्वॉड पहुंची

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। इलेक्शन कमीशन के अधिकारियों ने सोमवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी के हेलीकॉप्टर की जांच की। तमिलनाडु के नीलगिरि में फ्लाइंग स्क्वॉड के अधिकारियों ने यह छानबीन की। इस छानबीन के बारे में और डिटेल अभी सामने नहीं आई है। राहुल ने यहां नीलगिरि कॉलेज में आर्ट्स और साइंस के स्टूडेंट्स और चाय बागान के वर्कर्स से मुलाकात की। तमिलनाडु के बाद राहुल गांधी केरल के वायनाड पहुंचे। यहां उन्होंने रोड शो किया। रोड शो के दौरान उन्होंने कहा कि वायनाड के लोग हर बार मुझे जो प्यार और अपनापन देते हैं, उसके लिए मैं उनका शुक्रगुजार हूं। वायनाड का हर एक शख्स मेरा परिवार है। राहुल ने कहा कि कई बार एक परिवार में भाई-बहनों के बीच कई मामलों में राय अलग होती है, लेकिन इसका ये मतलब नहीं होता है कि वे एक-दूसरे से प्यार नहीं करते, एक-दूसरे का सम्मान या परवाह नहीं करते।

रेलवे से बदबूदार टॉयलेट्स की अब जल्द होगी छुट्टी!

आसान होगा आपका सफर, रेलवे ने मुंबई के स्टार्टअप से मिलाया हाथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। ट्रेन में सफर आपने कभी किया होगा तो आप इस बात की पीड़ा समझ पा रहे होंगे। भारतीय रेल की ट्रेन चाहे वंदे भारत एक्सप्रेस हो, राजधानी एक्सप्रेस हो, शताब्दी एक्सप्रेस हो या कोई अन्य ट्रेन। ट्रेन का टॉयलेट आपको बदबूदार ही मिलेगा। जिस स्टेशन से ट्रेन रवाना होती है, वहां भले ही टॉयलेट साफ-सुथरे मिले, लेकिन थोड़े समय में ही वे गंदे और बदबूदार हो जाते हैं। चलती ट्रेन में कभी-कभार टॉयलेट की सफाई भले ही हो जाती है, लेकिन बदबू दूर नहीं होती। लेकिन रेलवे बोर्ड ने तकनीक का लाभ उठा कर टॉयलेट्स की बदबू दूर करने का प्रयास कर रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय रेलवे का लक्ष्य प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर ट्रेनों में बदबूदार और गंदे शौचालयों की समस्या का समाधान करना है। पिछले कुछ सालों में यूं तो ट्रेन के डिब्बों में खूब सुधार हुआए हैं। लेकिन टॉयलेट की गंदगी और बदबू को दूर करने के प्रयास में सफलता नहीं मिली। इस समय रेल मदद पोर्टल और ऐप पर जितनी शिकायतें मिल रही हैं, उनमें ज्यादातर टॉयलेट्स से ही जुड़ी होती हैं। इन टॉयलेट्स का अभी तक कोई इंतजाम नहीं हो पाया है। रिपोर्ट के अनुसार, रेलवे बोर्ड ट्रेन के शौचालयों में दुर्गंध या बदबू का पता लगाने के लिए इंटरनेट ऑफ थिंग्स या आईओटी पर आधारित तकनीक के उपयोग पर विचार कर रहा है।

भोपाल तमिल संगम ने मनाया नववर्ष

भोपाल। भोपाल तमिल संगम ने तमिल संस्कृति और विरासत को बढ़ावा देने के लिए तमिल नव वर्ष समारोह आयोजित किया। कार्यक्रम में तमिल रीति-रिवाजों के साथ तमिल मातृभूमि का गुणगान किया गया। राज्यमंत्री कृष्णा गौर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। आईएएस डॉ. इलैयाराजा टी, रामनाथन, कार्यकारी निदेशक, भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड विशिष्ट अतिथि थे।

राज्य मंत्री कृष्णा गौर ने कहा कि तमिल समुदाय जिस उत्साह के साथ अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाता है, उसे देखकर खुशी होती है। भोपाल तमिल संगम के अध्यक्ष पी.राजू ने आभार व्यक्त किया। भोपाल तमिल संगम के महासचिव ए. स्वामीदुरई ने कहा कि तमिल नव वर्ष समारोह ने तमिल संस्कृति की समृद्धि को प्रदर्शित करने और हमारे समुदाय के भीतर संबंधों को मजबूत करने के लिए एक सार्थक मंच प्रदान किया।

मेरे फैसले किसी को डराने, दबाने के लिए नहीं: पीएम

● पीएम मोदी ने बताया फ्यूचर प्लान, खुलकर की बात ● इलेक्ट्रोरल बॉण्ड पर कहा-ईमानदारी से सोचेंगे तो सब लोग पछताएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। 19 अप्रैल को लोकसभा चुनाव के पहले फेज की वोटिंग है। इससे ठीक पहले पीएम मोदी ने एक इंटरव्यू दिया है। इसमें उन्होंने चुनावी बॉन्ड से लकर सीएए तक हर मुद्दे पर अपनी बात रखी। इस दौरान उनसे विकसित भारत 2047 के विजन पर भी चर्चा हुई। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें गति भी बढ़ानी है और स्केल भी बढ़ाना है। देश के सामने एक अवसर है, एक कांग्रेस सरकार का मॉडल है, एक बीजेपी सरकार का मॉडल है। उनका 5-6 दशक का कार्यकाल और मेरा सिर्फ 10 साल कार्यकाल। इंटरव्यू में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मेरे पास बड़ी योजनाएं हैं। किसी को डरने की जरूरत नहीं है। मेरे निर्णय किसी को डराने, दबाने के लिए नहीं हैं बल्कि वे देश के समग्र विकास के लिए हैं। इलेक्टोरल बॉन्ड के मुद्दे पर राहुल गांधी की ओर से किए जा रहे अटैक पर प्रधानमंत्री ने करारा जवाब दिया। उन्होंने कहा कि इलेक्टोरल बॉन्ड थे तो आपको ट्रेल मिल रहा मनी का। किस कंपनी ने दिया, कैसे दिया, कहां दिया। इसलिए मैं कहता हूं सब लोग पछताएंगे। वन नेशन, वन इलेक्शन पर पीएम मोदी ने कहा कि ये हमारी प्रतिबद्धता है।

सनातन विरोधी कमेंट पर वार

डीएमके की हालिया 'सनातन विरोधी' टिप्पणी और उस पर जनता के आक्रोश पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस से पूछा जाना चाहिए कि सनातन के खिलाफ इतना जहर उगलने वाले लोगों के साथ बैठना उनकी क्या मजबूरी है।

देश कैसे मजबूत हो, इस लक्ष्य पर काम कर रहा हूं

पीएम मोदी ने कहा कि जब देशवासी आपको देश चलाने की जिम्मेदारी देते हैं तो आपका सिंगल माइंडेड फोकस होना चाहिए– देश। दुर्भाग्य से पहले के राजनीतिक कल्चर में परिवार को कैसे मजबूत बनाना है, उसी में शक्ति लगाते थे। जबकि मैं देश कैसे मजबूत हो, इस लक्ष्य के साथ काम कर रहा हूं। हर परिवार का सपना होता है और वो सपना कैसे पूरा हो, ये मेरे दिल में पड़ा हुआ है। इसलिए मैं कहता हूं कि जो हुआ है वो ट्रेलर है। लेकिन मैं और अधिक काम करना चाहता हूं। यह पूछे जाने पर कि क्या हम भारत में टेस्ला कारें, स्टारलिंक देखेंगे। पीएम मोदी ने कहा कि एलन मस्क मोदी के प्रशंसक हैं यह एक बात है, लेकिन मूल रूप से भारत के प्रशंसक हैं।

राहुल गांधी के 'गरीबी हटा दूंगा' कमेंट पर पीएम का वार

कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि दुर्भाग्य से आज हमारे यहां शब्दों के प्रति कोई जिम्मेदारी ही नहीं है। मैंने एक नेता को कहते हुए सुना 'एक झटके में मैं गरीबी हटा दूंगा'। जिनको 5-6 दशक तक देश पर राज करने को मिला और वे आज कहते हैं कि मैं एक झटके में गरीबी हटा दूंगा। उन्हें सुनकर लोग सोचते हैं कि ये क्या बोल रहे हैं। हम 'प्राण जाए पर वचन न जाए' की महान परंपरा से निकले हैं। नेताओं को जिम्मेदारी लेनी चाहिए... आज हम जो कहते हैं उस पर लोगों को भरोसा है।

पीएम मोदी बोले- विविधता हमारी ताकत है

तथाकथित 'उत्तर–दक्षिण विभाजन' पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत को टुकड़ों में देखना देश के प्रति नासमझी का परिणाम है। अगर आप हिंदुस्तान में देखें प्रभु राम के नाम से जुड़े हुए गांव सबसे ज्यादा कहां है। तो वह तमिलनाडु में हैं। अब आप इसको कैसे अलग कर सकते हैं। विविधता हमारी ताकत है, हमें इसका जश्न मनाना चाहिए। वहीं कांग्रेस के आरोप पर कि 400 पार से संविधान रद्द हो जाएगा पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जो व्यक्ति यूएन में जाकर दुनिया की सबसे पुरानी भाषा तमिल का गुणगान करता है, किस आधार पर उस व्यक्ति पर आप ऐसे आरोप कैसे लगा सकते हैं। समस्या उनमें (विपक्ष) है वे देश को एक ही सांचे में ढालना चाहते हैं। हम विविधता की पूजा करते हैं।

इंदौर में अचानक बदला मौसम, शाम को गरज-चमक के साथ बारिश

इंदौर, एजेंसी। सोमवार सुबह आसमान से साफ रहा और धूप खिलने के कारण शहरवासियों को सुबह से ही गर्मी का अहसास हुआ। दोपहर बाद मौसम बदला और बादल छा गए। शाम को इंदौर के कई क्षेत्रों में बारिश शुरू हो गई। रविवार रात को बादलों के कारण रात के तापमान में बढ़ोतरी देखने को मिली। सुबह न्यूनतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री अधिक दर्ज किया गया। सुबह के समय उत्तरी और उत्तर पूर्वी हवाएं 11 किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से चली। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक राजस्थान पर बने कम दबाव के क्षेत्र के असर से ग्वालियर उज्जैन और सागर संभाग में जहां बारिश होने के आसार हैं। वहीं इंदौर में हल्के बादल शाम के समय छाएंगे।

2 से 3 डिग्री सेल्सियस की होगी बढ़ोतरी- भोपाल स्थित मौसम केंद्र के मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक वर्तमान में एक पश्चिमी विक्षोभ अफगानिस्तान के आस-पास की हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात रूप में बना हुआ है। इस चक्रवात से ही पश्चिम बंगाल अब तक एक द्रोणिका बनी हुई है। इसके असर से ग्वालियर, उज्जैन सागर संभाग के जिलों में आज गरज चमक के साथ बारिश होने के आसार हैं। वहीं इंदौर में बादल छाएगे और तापमान में 2-3 डिग्री की बढ़ोतरी होगी।

इंदौर में पुलिस से बदतमीजी करने वाले आरोपित का जुलूस निकाला

इंदौर, एजेंसी। रविवार रात खजराना चौराहे पर पुलिसकर्मियों से बदतमीजी करने वाले आरोपित करण ढालीवाल का पुलिस ने सोमवार को जुलूस निकाला। इस दौरान उसने कान पकड़कर माफी मांगी। करण गुंडे सोंटा का बेटा है। बताया जाता है कि सोंटा मंत्री तुलसी सिलावट का खास है। आरोपित करण ने रविवार रात पुलिसकर्मियों से नशे में अभद्रता की थी। रविवार रात को खजराना चौराहे पर ट्रैफिक थाना में पदस्थ सूबेदार ब्रजराज और सिपाही विकास शर्मा ट्रैफिक जाम में व्यवस्था संभाल रहे थे। इस दौरान आरोपित ट्रैफिक सिग्नल बंद होने के बाद भी हुटर बजाते हुए कार निकालने लगा। सिपाही विकास ने रोका तो अभद्रता करने लगा। नशे की हालत में सिपाही की कालर पकड़ी और धक्का-मुक्की की। वह पुलिसकर्मियों को धमकी देने लगा। पुलिस ने करण पर शासकीय कार्य में बाधा का केस दर्ज किया था। पुलिस ने सोमवार को खजराना चौराहे पर ही आरोपित का जुलूस निकाला।

इंदौर निगमायुक्त की चेतावनी- बगैर सूचना अनुपस्थित रहने वाले कर्मचारियों का कटेगा वेतन

इंदौर, एजेंसी। शहर की सफाई व्यवस्था का जायजा लेने इंदौर निगमायुक्त शिवम वर्मा सोमवार सुबह एक बार फिर सड़कों पर उतरे। वे संगम नगर स्थित गारबेज ट्रांसफर स्टेशन (जीटीएस) पहुंचे। उन्होंने कर्मचारियों के बारे में जानकारी ली तो पता चला कि तीन कर्मचारी बगैर किसी सूचना के अनुपस्थित हैं।

इस पर तीनों कर्मचारियों का एक दिन का वेतन काटने के निर्देश दिए गए। निगमायुक्त थ्री-आर सेंटर की व्यवस्था देखने भी पहुंचे। यहां बड़ी मात्रा में सामान रखा मिला। निगमायुक्त ने इस पर नाराजगी जताते हुए थ्री-आर सेंटर की व्यवस्था संभाल रहे एनजीओ के कर्मचारी को फटकार लगाई। उन्होंने निर्देश दिए कि सेंटर पर आने वाले सामान का समय पर उपयोग किया जाए। उन्होंने सेंटरों को तय समय पर खोलने के लिए भी कहा।

भागीरथपुरा की संकरी गलियों में ई-रिक्शा से होगा कचरा संग्रहण- भागीरथपुरा क्षेत्र में निरीक्षण के दौरान रहवासियों ने बताया कि क्षेत्र की संकरी गलियों की वजह से डोर टू डोर कचरा वाहन नहीं आ पाते हैं। इस वजह से रहवासियों को कचरा मुख्य मार्ग तक लेकर जाना पड़ता है। इस पर निगमायुक्त ने इस क्षेत्र में ई-रिक्शा के माध्यम से कचरा संग्रहण का काम करने के निर्देश दिए। निगमायुक्त राजकुमार पुल, पोलोग्राउंड, मरीमाता चौराहा, 15वीं बटालियन क्षेत्र, खड़े गणेश मंदिर चौराहा क्षेत्र में भी निरीक्षण करने पहुंचे।

इंदौर से घटी हवाई यात्रियों की संख्या : मार्च के मुकाबले अप्रैल में रोजाना लगभग 2 हजार यात्री घटे

इंदौर, एजेंसी। इंदौर से रोज़ाना सफ़र करने वाले यात्रियों की संख्या में गिरावट आई है। इंदौर एयरपोर्ट से मार्च में रोज़ाना औसतन 10 हज़ार 700 यात्री सफ़र करते थे। अप्रैल के शुरुआती 15 दिनों में ही यह संख्या घटकर 8 हज़ार 500 से 9 हज़ार के बीच आ गई है। यात्रियों की संख्या में आई गिरावट की वजह स्कूलों के शुरू होना बताया जा रहा है। इंदौर एयरपोर्ट से मिली जानकारी के अनुसार अभी रोजान 84 से 90 शेडयूल उड़ानों का संचालन हो रहा है। वाराणसी के लिए नई उड़ान का संचालन शुरू हुआ है। जिसे अच्छा रिस्पांस मिल रहा है। लेकिन यात्रियों की संख्या में मामूली कमी आई हैं। इंदौर से अभी साढ़े 8 से 9 हजार यात्री सफर कर रहे हैं। हालांकि किसी दिन यह आँकड़ा 10 हजार भी जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ़ ट्रेवल एजेंटों का कहना है कि इस माह से स्कूल फिर से खुल गए हैं, जिससे भी थोड़ा फर्क पड़ा है। लेकिन अगले माह से सीजन शुरू हो जाएगा। जिसके बाद यात्रियों की संख्या दोबारा बढ़ जाएगी।

इंदौर से भोपाल के बीच बना ग्रीन कॉरिडोर, ब्रेनडेथ के बाद शिक्षक की किडनी ने बचाई जिंदगी

इंदौर, एजेंसी। सागर निवासी 54 वर्षीय हरिशंकर धिमोले पेशे से शिक्षक थे। वे बीमारी के कारण अस्पताल में भर्ती थे। डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेनडेथ घोषित किया। परिजनों ने अंग दान करने पर सहमति दी। इसके बाद ग्रीन कॉरिडोर की संभावनाएं बनी। इंदौर से भोपाल के बीच सोमवार को ग्रीन कॉरिडोर बना। भोपाल के बंसल अस्पताल से इंदौर के चोइथराम अस्पताल के बीच ग्रीन कॉरिडोर के माध्यम से दो घंटे 45 मिनट में किडनी इंदौर लाई गई। जिससे अब एक व्यक्ति को जीवनदान मिलेगा। सागर निवासी 54 वर्षीय हरिशंकर धिमोले पेशे से शिक्षक थे। वे बीमारी के कारण अस्पताल में भर्ती थे। डाक्टरों ने उन्हें ब्रेनडेथ घोषित किया। परिजनों ने अंग दान करने पर सहमति दी। इसके बाद ग्रीन कॉरिडोर की संभावनाएं बनी।

इंदौर के चोइथराम अस्पताल में भर्ती एक व्यक्ति की किडनी खराब हो गई थी। तय प्रक्रिया के तहत उनका अंग प्रत्यारोपण के लिए चयन हुआ। परिजनों ने हरशंकर के अंगों को भीगी आंखों से विदाई दी। इसके बाद एम्बुलेंस में विशेष बाक्स में किडनी इंदौर पहुंचाई गई। एक किडनी भोपाल के अस्पताल में ही ट्रांसप्लांट की गई, जबकि दूसरी किडनी लेकर भोपाल से डॉक्टरों की मौजूदगी में एक टीम इंदौर के लिए रवाना हुई। इंदौर से भोपाल के बीच आने वाले जिलों के अफसरों को ग्रीन कॉरिडोर की सूचना दे दी गई थी, ताकि रास्ते यातायात बाधित न हो। भोपाल से एम्बुलेंस 12.30 बजे रवाना हुई, जो इंदौर तक 3.15 तक पहुंच गई। डाक्टरों ने पहले से ही प्रत्यारोपण की तैयारी कर ली थी। आपको बता दे कि इंदौर ग्रीन कॉरिडोर के मामले में देश में नंबर वन पर है। अब तक इंदौर में 55 ग्रीन कॉरिडोर बन चुके है। सात सालों पहले इंदौर में पहला ग्रीन कॉरिडोर बना था।

पतंजलि के पैकेट में 53 ग्राम कम निकला बिस्किट, कंपनी और डी-मार्ट पर 1.40 लाख रुपये का जुर्माना

इंदौर, एजेंसी। बाबा रामदेव की कंपनी पतंजलि के खिलाफ नापतौल विभाग ने कार्रवाई की है। पैकेट में 53 ग्राम बिस्किट कम निकलने पर विभाग ने प्रकरण दर्ज किया है। साथ ही सुपर मार्केट डी-मार्ट को भी कार्रवाई के दायरे में लिया है। दोनों के खिलाफ विभाग ने जुर्माना लगा दिया है। अधिकारी के मुताबिक, कंपनी पर एक लाख 20 हजार रुपये और सुपर मार्केट पर 20 हजार रुपये का जुर्माना लगाया है। नवंबर 2023 में महेंद्र जाट ने कनाड़िया स्थित डी-मार्ट कंपनी से 800 ग्राम पतंजलि बिस्किट का पैकेट खरीदा था। इसके बदलने में 125 रुपये दिए। पैकेट का वजन कम होने पर महेंद्र ने जागरूक उपभोक्ता समिति को मामले की जानकारी दी। समिति ने इसकी शिकायत नापतौल विभाग से की। जांच करने पर पैकेट का वजन 746.70 ग्राम निकला। पैकेट में 53 ग्राम बिस्किट कम था, जिसकी कीमत सात रुपये थी। नोटिस में स्वीकारी गलती नापतौल विभाग के उपनियंत्रक एसए खान का कहना है कि शिकायत मिलने पर पैकेट की जांच की थी। इसके बाद पतंजलि और डी-मार्ट को नोटिस दिया। उन्होंने पैकेट का वजन कम होने को सही बताया।

वैदिक पद्धति से ऑरा हेल्थ चेक अप, ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के अलावा आहार विशेषज्ञ ने दी सलाह

इंदौर, एजेंसी। आज के तनावपूर्ण समय में हमें दवाओं के बिना अपना उपचार करने की आवश्यकता है, और ये वैदिक हीलिंग के माध्यम से संभव है। हमारे भीतर के पंचतत्वों को संतुलित करके हम एक खुशहाल जीवन जी सकते हैं। इंदौर में अलग तरह का हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया।

इसमें ऑरा रीडिंग, वैदिक हीलिंग, बॉडी एलाइमेंट्, टैरो कार्ड रीडिंग, ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के अलावा आहार विशेषज्ञ द्वारा निःशुल्क सलाह दी गई। बता दें कि विधातास भारतीय पारंपरिक चिकित्सा एवं गुरुकुल और सोलआर्ट के द्वारा निशुल्क ऑरा हेल्थ चेक अप कैंप का आयोजन श्रीनगर एक्सटेंशन में किया गया। शिविर के दौरान विधातास् के संस्थापक निदेशक डॉ. रवींद्र बागे एवं डॉ. लताश्री ने भारतीय वैदिक चिकित्सा पद्धति के विषय में, वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक तरीकों से समझाया कि किस प्रकार आभा मंडल की चिकित्सा द्वारा शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक ऊर्जा के अवरोध को दूर किया जा सकता है। अपने ऊर्जा के स्तर को बढ़ाया जा सकता है और बिना दवाइयों के भी स्वयं को स्वस्थ रखा जा सकता है।डॉ. रचना सिंह ने बताया है कि आज के तनावपूर्ण समय में हमें दवाओं के बिना अपना उपचार करने की आवश्यकता है, और ये वैदिक हीलिंग के माध्यम से संभव है। हमारे भीतर के पंचतत्वों को संतुलित करके हम एक खुशहाल जीवन जी सकते हैं। पंचतत्वों का संतुलन हम बिना दवाओं के कई तरीकों से कर सकते हैं - जैसे कि वैदिक हीलिंग, एक्यूप्रेशर, वास्तु, मंत्र हीलिंग आदि। इस शिविर में एक्यु-कायरो प्रैक्टिशनर डॉ. अनिल सरावगी, वास्तु एस्ट्रो वैदिक हीलर डॉ. रचना सिंह परमार, आहार विशेषज्ञ नेहा गर्ग के अलावा मास्टर स्पिरिटुअल् हीलर डॉ. प्रियंका परमार, डॉ. राजश्री देशपांडे, निमिषा पांडे, अंजली राव ने निःशुल्क सेवा प्रदान की। इससे अनेक लोग लाभान्वित हुए।

मंत्री प्रहलाद पटेल बोले- छिंदवाड़ा में इस बार परिवारवाद समाप्त होगा, नहीं चलेगा धन प्रबंधन

इंदौर, एजेंसी। पटेल ने कहा कि मोदी सरकार ने विरासत और विकास दोनों को आगे बढ़ाया है। भारत से बाहर ले जाई गई मूर्तियों को हम वापस लाएंगे और उनके मूल स्थान पर स्थापित करेंगे। मूर्तियां पहले भी आती थीं, लेकिन उन्हें म्यूजियम में रख दिया जाता था। कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल सोमवार को इंदौर आए। उन्होंने मीडिया से चर्चा में कहा कि जब मैं छिंदवाड़ा से चुनाव लड़ा था तब मैंने कमलनाथ और कांग्रेस का आंतक वहां से समाप्त किया था। इस चुनाव में छिंदवाड़ा से परिवारवाद समाप्त होने वाला है। चुनाव में हमेशा कमलनाथ के ग्रास रूट स्तर पर पकड़ होने की बात होती है, लेकिन वहां सिर्फ कमलनाथ का धन प्रबंधन होता है, जो इस चुनाव में नहीं है। पटेल ने कहा कि इस देश पर कांग्रेस ने कई दशक राज किया, लेकिन देशवासियों की रोजमर्रा की सुविधा पर ध्यान नहीं दिया गया। राहुल गांधी

एक झटके में गरीबी हटाने की बात करते हैं। उनकी दादी इंदिरा गांधी ने पचास साल पहले गरीबी हटाने का नारा दिया था, लेकिन वह सिर्फ जुमला था। यदि देश से गरीबी वे हटा देतीं तो हमारी अर्थव्यस्था देश में पहले स्थान पर रहती। भ्रष्टचार के आरोपों से घिरे कांग्रेस के नेतागणों की भाजपा में एंट्री के सवाल पर पटेल बोले कि भ्रष्टाचार करने वाले का दल और जाति नहीं देखी जाती है। जिन्होंने भ्रष्टचार किया है। उन्हें बक्शा नहीं जाएगा। पटेल ने कहा कि मोदी सरकार ने विरासत और विकास दोनों को आगे बढ़ाया है। भारत से बाहर ले जाई गई मूर्तियों को हम वापस लाएंगे और उनके मूल स्थान पर स्थापित करेंगे। मूर्तियां पहले भी आती थीं, लेकिन उन्हें म्यूजियम में रख दिया जाता था। भाजपा में कांग्रेस के नेता-कार्यकर्तागणों के लगातार आने से जुड़े सवाल पर मंत्री पटेल बोले कि कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आने वालों को चुनाव और हार-जीत से जोड़कर न देखा जाए। मुझे लगता है कि भारत जिन ऊंचाइयों को छूने की तरफ आगे कदम बढ़ा रहा है। उस यात्रा में जो भी शामिल होता है, उसका हम स्वागत करते हैं।

लोकसभा चुनाव में मतदान बूथों की बिजली व्यवस्था संभालेंगे 2000 अधिकारी-कर्मचारी

इंदौर, एजेंसी। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदान बूथों पर संपूर्ण व्यवस्था करने के आदेश के मद्देनजर मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने भी प्रभावी तैयारी की है। कंपनी ने मालवा-निमाड़ क्षेत्र यानी इंदौर और उज्जैन के मुख्य अभियंताओं को लोकसभा चुनाव के मद्देनजर बूथों की समीक्षा करने के निर्देश दिए है। कंपनी के करीब 520 इंजीनियरों समेत दो हजार कर्मचारी इस व्यवस्था को संभालेंगे। कंपनी क्षेत्र यानी इंदौर-उज्जैन संभाग में करीब अठारह हजार पांच सौ बूथ हैं। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर के प्रबंध निदेशक अमित तोमर ने बताया कि मतदान बूथों पर बिजली वितरण के लिए इंदौर व उज्जैन के मुख्य अभियंताओं समेत सभी 15 जिलों के अधीक्षण अभियंता, 55 डिविजनों के कार्यपालन अभियंता अपने इलाके के बूथों की संपूर्ण व्यवस्थाएं कराएंगे। इसके साथ ही जोन, वितरण केंद्रों पर पदस्थ 450 सहायक अभियंता, कनिष्ठ अभियंता भी बूथों की बिजली व्यवस्था की समीक्षा करेंगे, यदि दूरदराज के किसी बूथ पर स्थाई बिजली कनेक्शन नहीं है, तो वहां अस्थाई कनेक्शन प्रदान किया जाएगा। तोमर ने बताया कि सभी 15 अधीक्षण अभियंताओं एवं 55 कार्यपालन अभियंताओं को संबंधित जिला निर्वाचन अधिकारी एवं रिटर्निंग अधिकारियों से सतत तालमेल बनाए रखने के निर्देश दिए है, ताकि बूथों पर भारत निर्वाचन आयोग के आदेशानुसार व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा सके।

इंदौर कलेक्टर कार्यालय के जनजाति विभाग में लोकायुक्त की दबिश

महिला कर्मचारी को 50 हजार की रिश्वत लेते पकड़ा

फरियादी ने विभाग को हास्टल किराए पर दे रखा था, उसका किराया 11 लाख रुपये बाकी था, जिसे देने के एवज में आरोपितों ने रिश्वत मांगी

इंदौर, एजेंसी। लोकायुक्त पुलिस ने सोमवार को इंदौर कलेक्टर कार्यालय स्थित जनजाति विभाग में एक महिला कर्मचारी को 50 हजार रुपये की रिश्वत लेते पकड़ा है। महिला कर्मचारी सहायक ग्रेड-2 उमा मर्सरोले के साथ क्षेत्र संयोजक विजयकुमार जायसवाल पर भी कार्रवाई हुई है। रानीबाग मेन खंडवा रोड निवासी विक्रम सिंह गेहलोत ने इसकी शिकायत की थी। गेहलोत ने श्री कृष्णा एवेन्यू थर्ड फेज एबी रोड स्थित अपना हास्टल वर्ष 2015 से 2023 तक जनजातीय कार्य विभाग को किराए पर दिया था। यहां विभाग का जूनियर कन्या छात्रावास चल रहा था। 23 अप्रैल को गेहलोत ने हास्टल खाली करवा लिया था। गेहलोत ने विभाग से किराय वृद्धि का एरियर करीब 11 लाख रुपये मांगा। इस पर विभाग के क्षेत्रीय संयोजक विजय जायसवाल एवं सहायक ग्रेड-2 उमा मर्सकोले ने उस राशि में से 15 प्रतिशत राशि रिश्वत के रूप में मांगी। इस पर

गेहलोत ने इसकी शिकायत लोकायुक्त कार्यालय इंदौर में की।

रुपये लेकर अलमारी में रखे

इसके बाद आरोपितों की पकड़ने की योजना बनाई। फरियादी गेहलोत और मंडल संयोजक के बीच 50 हजार रुपये देना तय हुआ। इस पर सोमवार को फरियादी गेहलोत क्षेत्रीय संयोजक से मिलने पहुंचे। उस समय विजय जायसवाल कार्यालय में नहीं था। उसने कहा कि वह रुपये उमा मर्सकोले को दे दें। उमा ने ये रुपये अपनी सरकारी अलमारी में रख लिए। इसी दौरान लोकायुक्त की टीम पहुंच गई और रिश्वत लेते रंगेहाथ पकड़ लिया।

इंदौर के खजराना में नरमुंड की माला पहने मां काली के नौ फीट ऊंचे विराट स्वरूप के दर्शन

देश-विदेश में प्रसिद्ध खजराना गणेश मंदिर से एक किलोमीटर आगे हैं मां कालिका मंदिर

इंदौर, एजेंसी। शहर के खजराना स्थित काली माता मंदिर अहिल्या की नगरी के रहवासियों के बीच आस्था का केंद्र है। यहां पर मां काली का नौ फीट ऊंचा स्वरूप विराजित है। चार भुजाधारी मूर्ति के गले में नरमुंड की माला है। यहां चैत्र और शारदीय नवरात्र के साथ माघ और आषाढ़ माह की गुप्त नवरात्र में भक्तों का मेला लगता है। इस दौरान मां का 101 लीटर दूध से प्रतीकात्मक अभिषेक कर इसका वितरण प्रसाद के रूप में आसपास की गरीब बस्तियों में किया जाता है।

इतिहास -फैक्ट्री बेचकर बनवाया था मंदिर- देश-विदेश में ख्यात खजराना गणेश मंदिर के पास स्थित इस मंदिर ने आकार लेना वर्ष 1976 से शुरू किया था। उस समय स्वं राधेश्याम अग्रवाल (बापूजी) ने अपनी चार में

तीन फैक्ट्रियां बेचकर मंदिर का निर्माण शुरू किया था। उस समय यहां एक छोटी मूर्ति विराजित थी। इसके बाद मंदिर के पास की भूमि एक भक्त हरिकिशन पाटीदार ने दान स्वरूप दी। जमीन मिलने के बाद 1984 से वहद स्वरूप के मंदिर का निर्माण शुरू हुआ। इसके बाद 17 फरवरी 1991 में माता की नौ फीट ऊंची मूर्ति विराजित की गई जो जयपुर से आठ किलोमीटर दूर छितोली गांव से लाई गई थी।

हर दिन मनोहारी श्रृंगार

मंदिर में हर दिन माता का मनोहारी श्रृंगार होता है। नवरात्र में यहां की जाने वाली आकर्षक विद्युत और पुष्प सज्जा देखते ही बनती है। यहां कतारबद्ध होकर भक्त माता की स्तुति करते नजर आते हैं। इसके साथ ही विभिन्न अवसरों पर माता का विशेष श्रृंगार किया जाता है। अष्टमी-नवमी को दर्शन-पूजन के लिए लंबी कतारे लगती हैं। परिसर में अन्य देवी-देवताओं के भी मंदिर हैं। इसमें भगवान शिव का पारे का शिवलिंग भक्तों में विशेष आस्था का केंद्र है।

कुछ ही स्थानों पर होते हैं विराट स्वरूप के दर्शन

यहां माता की प्राण-प्रतिष्ठा देशभर से आए विद्वानों की मौजूदगी में की गई थी। वर्तमान में यहां सत्संग सभागृह के साथ अन्य कई सेवा योजना को आकार दिया जा रहा है। माता के इतने विराट स्वरूप के दर्शन देश में कुछ ही स्थानों पर होते हैं। काली माता की प्राण प्रतिष्ठा के बाद यहां पारदेश्वर महादेव की प्रतिष्ठा की गई।

- गुलशन अग्रवाल, पुजारी

महिलाओं ने निकाली कार रैली, मतदान करने के लिए युवाओं को प्रेरित किया

इंदौर, एजेंसी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष सिंह तथा आयुक्त शिवम वर्मा के द्वारा लोकसभा निर्वाचन 2024 में अधिक से अधिक मतदान के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मतदान जागरूकता अभियान के अंतर्गत द वर्ल्ड ऑफ फिटनेस ग्रुप व एमजी मोटर्स के सहयोग से इंदौर स्मार्ट सिटी द्वारा वोटिंग ड्राइव कार रैली का आयोजन किया गया। कार रैली को स्मार्ट सिटी सीईओ दिव्यांक सिंह एवं अधीक्षण यंत्री महेश शर्मा द्वारा नेहरू स्टेडियम से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। स्मार्ट सिटी सीईओ दिव्यांक सिंह ने बताया कि आगामी लोकसभा निर्वाचन 2024 में इंदौर शहर में अधिक से अधिक मतदान को दृष्टिगत रखते हुए, मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से स्वीप प्लान के अंतर्गत विभिन्न आयोजन किया जा रहे हैं, इसी क्रम में आज द वर्ल्ड ऑफ फिटनेस ग्रुप व एमजी मोटर्स के सहयोग से इंदौर स्मार्ट सिटी द्वारा नेहरू स्टेडियम से गीता भवन चौराहा, पलासिया चौराहा, एल आई जी चौराहा, विजयनगर चौराहा, शालीमार टाउनशिप चौराहा, निरंजनपुर चौराहा से यू टर्न लेकर विजयनगर ए बी रोड होते हुए, नेहरू स्टेडियम तक वोटिंग ड्राइव कार रैली का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में विभिन्न संस्थाओं की प्रतिनिधि एवं अन्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार रैली के लिए बड़ी संख्या में उपस्थित प्रतिभागियों को मतदान के लिए प्रेरित किया गया तथा शपथ दिलाई गई।

संपादकीय

काम करे लोकतंत्र

भारत में चुनावी सरगर्मी के दौर में सत्ता में आने, सत्ता बचाने और सत्ता छीनने की तेज जद्दोजहद के बीच दिल्ली उच्च न्यायालय की यह टिप्पणी सुखद और स्वागत योग्य है कि लोकतंत्र को अपना काम करने दिया जाए। दरअसल, दिल्ली उच्च न्यायालय ने भ्रष्टाचार के आरोप में पिछले महीने हुई गिरफ्तारी के बाद अरविंद केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद से हटाने की मांग वाली तीसरी याचिका को खारिज कर दिया है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन की अगुवाई वाली पीठ ने दिल्ली के उप-राज्यपाल को किसी तरह की सलाह देने से भी मना कर दिया है। केजरीवाल के खिलाफ दायर की गई इन याचिकाओं की दलील है कि अदालत दिल्ली के उप-राज्यपाल को निर्देशित करे और मुख्यमंत्री का इस्तीफा लिया जाए। वास्तव में, पद न छोड़ने या पद से हटाने की राजनीति कतई अदालती विषय नहीं है। किसी भी नेता को किसी पद से हटाने की अपनी स्थापित परंपराएं हैं, उन परंपराओं में अदालती हस्तक्षेप से न्यायपालिका और विधायिका के बीच विवाद की स्थिति बन सकती है। अतः अदालत के रुख की प्रशंसा होनी चाहिए और जो लोग केजरीवाल को हटाने के पक्ष में हैं, उन्हें जिम्मेदार राजनीतिक आकाओं पर दबाव बनाना चाहिए।

नैतिकता का सवाल अलग-अलग ढंग से किसी नेता को परेशान करता है और नेता अलग-अलग ढंग से इस सवाल का जवाब देते हैं। नैतिकता का प्रश्न केवल नेताओं को ही नहीं, बल्कि राजनीतिक पार्टियों को भी परेशान करता है। अब के दौर में जो चलन है, उसके अनुसार, राजनीतिक पार्टियां अपने मतदाताओं के मानस को समझकर ही फैसला लेती हैं। आम आदमी पार्टी में भी चुने हुए सभी विधायक यदि अरविंद केजरीवाल को मुख्यमंत्री बनाए रखने के पक्ष में हैं, तो उन्हें ऐसा करने का हक है। उन्होंने निश्चित ही इस बड़े फैसले के लाभ-हानि पर विचार किया होगा। ऐसे में, उच्च न्यायालय ने उचित ही इशारा किया है कि 'उप-राज्यपाल को हमारे मार्गदर्शन की जरूरत नहीं है। हम उन्हें सलाह देने वाले कोई नहीं हैं। उन्हें कानून के अनुसार, जो भी करना होगा, वह करेंगे।' कहना न होगा, जिस देश में चार करोड़ से ज्यादा मामले अदालत में लंबित हों, वहां राजनीति को अपने हर झगड़े के निपटारे के लिए कोर्ट का दरवाजा नहीं खटखटाना चाहिए। न्यायालय या न्यायपालिका की अपनी सीमा है और राजनीति से जुड़ी नैतिकता की दुहाई देते हुए न्यायालय पहुंचने की परिपाटी हमारी समग्र व्यवस्था के अनुकूल नहीं है। एक सुखद पहलू है कि इस देश में नैतिकता के सवाल पर पहले अनेक राज्य सरकारें बर्खास्त हुई हैं, पर इधर सरकारों की बर्खास्तगी के प्रति केंद्र सरकार में संवेदना बढ़ी है, तो यह लोकतंत्र की परिपक्वता का भी एक प्रमाण है। सरकारों को मर्जी से नहीं, बल्कि संविधान से प्रेरित होना चाहिए।

ध्यान रहे कि अरविंद केजरीवाल को कथित शराब नीति घोटाले के सिलसिले में 21 मार्च को गिरफ्तार किया गया था और वह अपनी लड़ाई अदालत और अवाम के बीच बड़ी मुखरता से लड़ रहे हैं। उनके पक्ष में ऐसे नेताओं की बड़ी संख्या है, जो मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी को गलत मानते हैं। अदालत भी पहले संकेत कर चुकी है कि अभियोजन चल रहा है और आरोपी को जमानत पर छोड़ा भी जा सकता है। इस मामले के पटाक्षेप में समय लग सकता है, फिर भी अगर कुछ लोग इस मोर्चे पर जल्दी मचाना चाहते हैं, तो उनके पास किसी को पद से हटाने के लिए अकाट्य तर्क होने चाहिए।

भाजपा को पवार-उद्धव से बड़ी चुनौती

महाराष्ट्र की राजनीति

नवीन कुमार

लेखक मुंबई के वरिष्ठ पत्रकार हैं।

महाराष्ट्र में शरद पवार की एनसीपी और उद्धव ठाकरे की शिवसेना को तोड़ने के बाद भी भाजपा खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कर पा रही है। उसके सामने पवार और उद्धव अब भी चुनौती के रूप में खड़े हैं। इस चुनौती से निपटने के लिए भाजपा उत्तर भारतीय विरोधी मनसे नेता राज ठाकरे से भी समझौता करने को बेचैन है। उसे लगता है कि राज के सहारे उद्धव के मराठी वोट में सेंध लगाना आसाना होगा। भाजपा के अंदर अलग तरह का डर दिखता है। यह डर दूर करने के लिए भाजपा अपने सहयोगी एकनाथ शिंदे और अजित पवार को दबाने की कोशिश भी कर रही है। इससे उनके बीच आपसी विश्वास पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। भाजपा के रवैए से परेशान शिंदे और अजित अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। उनका यह आंतरिक संघर्ष सीटों के बंटवारे में भी दिख रहा है। भाजपा अपने आंतरिक सर्वे को हथियार बना लिया है जिसके जरिए शिंदे और अजित को कमजोर कड़ी बताते हुए उसकी ज्यादा से ज्यादा सीटें हड़पने में लगी हुई है। मगर इसमें भाजपा को कामयाबी नहीं मिल रही है। शिंदे ने तो जैसे को तैसा वाले फार्मूले को अपनाते हुए अब भाजपा को ही कमजोर कड़ी में शामिल कर दिया है। इससे भाजपा तिलमिलायी हुई है।

मोदी के लिए महाराष्ट्र में भी भाजपा ने ज्यादा से ज्यादा लोकसभा की सीटें जीतने का लक्ष्य रखा है। इसलिए राज्य में इस बार 45 पार का नारा दिया है। 2019 के चुनाव में भाजपा और शिवसेना (अविभाजित) ने साथ मिलकर चुनाव लड़ा था जिससे उसे 41 सीटों पर जीत मिली थी। लेकिन अब तो शिवसेना का विभाजन हो चुका है और शिंदे गुट भाजपा के साथ मिलकर सत्ता पर काबिज है। 105 विधायक होने के बावजूद भाजपा ने शिंदे को मुख्यमंत्री के रूप में स्वीकार किया है। लेकिन, पवार और उद्धव की पार्टी टूटने के बाद भी भाजपा को विश्वास ही नहीं हो पा रहा है कि वह 45 पार के लक्ष्य को हासिल कर पाएगी। उसे शिंदे गुट की शिवसेना और अजित गुट की एनसीपी पर भरोसा ही नहीं हो पा रहा है कि उसके सहयोग से लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है।

माना जा रहा है कि राजनीतिक जमीन को समझने के बाद ही भाजपा कठोर मन से शिंदे गुट और अजित गुट को कम से कम सीटें देने की रणनीति पर काम कर रही है। इससे शिंदे गुट और अजित गुट में नाराजगी है। इन दोनों गुटों के सांसद और नेता दबने को तैयार नहीं हैं। ये ऐसा मान रहे हैं कि अगर दब गए तो इसका मतदाताओं के बीच गलत संदेश जाएगा। उनको भी लगेगा कि शिंदे गुट और अजित गुट के उम्मीदवार जीतने की स्थिति में नहीं हैं। इसलिए इनको जिताने से बेहतर है कि पवार और उद्धव गुट के उम्मीदवारों को जिताया जाए। वैसे भी, पवार और उद्धव गुट को सहानुभूति मिलने की पूरी संभावना है जो भाजपा के सेहत के लिए अच्छा नहीं माना जा रहा है।

राजनीतिक पंडितों का मानना है कि भाजपा ने शिंदे गुट और अजित गुट पर दबाव तंत्र का प्रयोग नहीं करती तो मतदाताओं के बीच उसका सकारात्मक संदेश जाता। लेकिन सीटों के बंटवारे में जिस तरह के नाटक हो रहे हैं उससे भाजपा की राजनीति भी समझ में आ रही है। भाजपा की छवि ऐसी बन रही है कि उसके सामने शिंदे गुट और अजित गुट का ज्यादा महत्व नहीं है। लेकिन यह सच है कि भाजपा 45 पार के लक्ष्य को शिंदे गुट और अजित गुट के बिना पा नहीं सकती है। अलग गुट बना लेने के बाद शिंदे गुट और अजित गुट को भी अपना अस्तित्व कायम रखना है। इसके लिए ये दोनों गुट मोदी के लिए गारंटी बनने की हर संभव कोशिश कर रहे हैं।

शिंदे अपने सांसदों और नेताओं की भावनाओं की कद्र करते हुए हमेशा यही कहते हैं कि हमें मोदी को जिताना है। उनके 400 पार के सपने को पूरा करना है। जब शिंदे की यह सकारात्मक सोच है तो फिर भाजपा नकारात्मक सोच से क्यों घिरी हुई है, यह भी एक सवाल है। दरअसल, भाजपा को ही अपनी ज्यादातर सीटों पर जीत का भरोसा नहीं है। इसलिए भाजपा शिंदे गुट और अजित गुट की सीटों पर जीत की गारंटी पक्की करना चाहती है। इस चक्कर में भाजपा की ओर से कुछ ऐसे कदम उठाए जा रहे हैं जिससे विपक्ष का भरोसा मजबूत हो रहा है। यह भाजपा के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा था कि 400 पार के लक्ष्य को पूरा करने के लिए मुंबई की छह लोकसभा सीटों को जीतना जरूरी है। असल में, मुंबई की छह सीटें जीतना आसान नहीं है। यहां उद्धव की शिवसेना कड़ी टक्कर देने के लिए तैयार है, कांग्रेस भी है। मुंबई के साथ ही ठाणे, कल्याण और कोकण की सीटों पर किसी भी पार्टी के लिए जीत आसान नहीं है। अगर पुरानी शिवसेना की ताकत को आंका जाए तो उसी का दबदबा रहा है। लेकिन ठाणे और कल्याण में शिवसेना के टूटने के बाद शिंदे की शिवसेना खुद को मजबूत मान रही है। शिवसेना के साथ उसके शिवसैनिकों की समर्पित भावना पर गौर करना पड़ेगा। शिवसैनिकों के लिए शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे उनके भगवान समान हैं। उनके प्रति उनकी भावना को बांटना मुश्किल है।

यही वजह है कि उद्धव अपने शिवसैनिकों को लेकर काफी आश्वस्त हैं। लेकिन शिंदे जो यह प्रचारित कर रहे हैं कि उनकी शिवसेना बाला साहेब के सिद्धांतों वाली है। उनके हिंदुत्व के साथ ही शिवसैनिक हैं। शिवसैनिकों को लेकर ये दो रास्ते दिख रहे हैं। यही भाजपा को विचलित किए हुए है। इसी तरह से पवार के प्रति भी उनके समर्थकों की भावना है। 83 साल के शरद पवार इस चुनावी जंग में डटे हुए हैं और अपने भतीजे अजित को परास्त करना चाहते हैं। पवार के चेहरे पर शिकन नाम की चीज नहीं है। वह अपनी टूटी हुई एनसीपी को उसी तरह से खड़ी करने में लगे हैं जिस तरह से उन्होंने पहली बार अपनी पार्टी एनसीपी तैयार की थी। सहानुभूति की लहर जैसी भी हो। भाजपा के लिए यह अच्छा नहीं माना जा रहा है।

सीटों के बंटवारे में भाजपा और विपक्ष दोनों की स्थिति समान है। लेकिन हार के मामले में विपक्ष से ज्यादा भाजपा सहमी हुई है। विपक्ष तो हार से ज्यादा जीत की कोशिश कर रहा है। लेकिन भाजपा को तो हर हाल में जीत की ओर ही बढ़ना है। भाजपा के लिए यह चुनाव मोदी को जिताने के लिए है। मोदी का भी अपना आत्मविश्वास यही है कि इस बार विजयी सिर्फ हैट्रिक नहीं है बल्कि एक नया इतिहास भी बनाना है। इसलिए इस नई जीत के लिए मोदी पर भी दबाव ज्यादा है। विपक्ष ने लोकतंत्र और संविधान को बचाने के साथ केंद्रीय एजंसियों के दुरूपयोग, चुनावी बांड घोटाले, भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी को चुनावी मुद्दा बनाया है। विपक्ष का यह भी आरोप है कि मोदी सरकार के 10 साल के कार्यकाल में आम जनता के लिए विकास के काम नहीं हुए हैं। लेकिन भाजपा का दावा है कि मोदी ने देश का नाम विश्व में मजबूत किया है। देश को आर्थिक रूप से भी बेहतर किया है। देश विकास के रथ पर सवार है। हिंदुत्व की भावना को भी जगाया गया है।

भाजपा की हिंदुत्व की वजह से मुस्लिमों के अंदर एक अलग तरह का डर बसा हुआ है जिससे वो शांत हैं। इसलिए भाजपा ने मोदी और श्रीराम को चुनावी मुद्दा बनाया है। इन मुद्दों में मोदी गारंटी हैं तो हिंदुओं के लिए श्रीराम हैं। 500 साल के बाद अयोध्या में श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा हुई है जो हिंदुओं के लिए सबसे बड़ी बात है। मोदी के लिए यह चुनावी नैया पार कराने वाले मुद्दे हैं। इतने सकारात्मक मुद्दे होने के बावजूद महाराष्ट्र में भाजपा कमजोर क्यों दिख रही है इसका सूक्ष्म आकलन करने की जरूरत है। लेकिन पवार गुट की एनसीपी, उद्धव गुट की शिवसेना और कांग्रेस भाजपा पर हमलावर बनी हुई है। हिंदुत्व को अब सभी राजनीतिक पार्टियां स्वीकार करती हैं। इसलिए हिंदुत्व का मुद्दा कितना सकारात्मक परिणाम देगा यह चिंतन का विषय है। भाजपा तो इसे अपने लिए अहम मुद्दा मानती है। विपक्ष का कहना है कि मोदी सरकार के जनविरोधी काम से आम जनता नाराज है और बदलाव चाहती है। आम जनता की भावना जो भी हो लेकिन मतदान के दौरान जनता की भावना क्या रहती है वो मायने रखता है।

राजनीति

प्रो. संजय द्विवेदी

लेखक भारतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक रहे हैं।

राजनीति में भी चमके मीडिया के सितारे

इन दिनों देश में लोकतंत्र का महापर्व चल रहा है। जाहिर है राजनीति का आकर्षण प्रबल है। सिने कलाकार, साहित्यकार, वकील, न्यायाधीश, खिलाड़ी, गायक, उद्योगपति सब क्षेत्रों के लोग राजनीति में हाथ आजमाना चाहते हैं। ऐसा ही हाल पत्रकारिता के सितारों का भी है। मीडिया और पत्रकारिता के अनेक चमकीले नाम राजनीति के मैदान में उतरे और सफल रहे।

आजादी के आंदोलन में तो मीडिया को एक तंत्र की तरह इस्तेमाल करने के लिए प्रायः सभी वरिष्ठ राजनेता पत्रकारिता से जुड़े और उजली परंपराएं खड़ी कीं। बालगंगाधर तिलक, महात्मा गांधी से लेकर सुभाष चन्द्र बोस, महामना मदनमोहन मालवीय, पंडित नेहरू सभी पत्रकार रहे। आजादी के बाद बदलते दौर में पत्रकारिता और राजनीति की राहें अलग-अलग हो गईं, लेकिन सत्ता का आकर्षण बढ़ गया। जनपक्ष, राष्ट्र सेवा की पत्रकारिता अब आजाद भारत में राष्ट्र निर्माण का भाव भरने में लगी थी। सेवा राजनीति के माध्यम से भी की जा सकती है, यह भाव भी प्रबल हुआ।

मूल्यों पर 'अटल' रहने वाले 'वाजपेयी'- राजनीतिक दलों से संबंधित समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के अलावा मुख्यधारा की पत्रकारिता से भी लोग राजनीति में आए, जिसमें सबसे खास नाम श्री अटल बिहारी वाजपेयी का है, जो 'वीर अर्जुन' जैसे दैनिक अखबार के संपादक रहे। इसके साथ ही वे 'स्वदेश', 'पांचजन्य' और 'राष्ट्रधर्म' के भी संपादक रह चुके थे। वह जहां संसदीय राजनीति के लंबे अनुभव के साथ प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री भी रहे, तो वहीं भाजपा के वह संस्थापक अध्यक्ष भी रहे। उप प्रधानमंत्री रहे लालकृष्ण आडवाणी भी 'हिंदुस्तान समाचार' और 'ऑर्गनाइजर' से जुड़े रहे, फिर राजनीति में आए।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे द्वारिका प्रसाद मिश्र दैनिक 'लोकमत', साप्ताहिक 'सारथी' और 'श्री शारदा' के संपादक के रूप में ख्याति प्राप्त हुए। विंध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे शंभूनाथ शुक्ल बाद में बने मध्यप्रदेश में मंत्री और सांसद रहे। 'विशाल भारत' के संपादक रहे बनारसी दास चतुर्वेदी दो बार राज्यसभा के सदस्य रहे। गणेश शंकर विद्यार्थी के शिष्य रहे बालकृष्ण शर्मा नवीन 'प्रताप' के संपादक रहे और कांग्रेस से राज्यसभा पहुंचे। महाराष्ट्र का दर्डा परिवार राजनीति में अग्रणी रहा। 'लोकमत' समाचार के संस्थापक जवाहरलाल दर्डा, राजेन्द्र दर्डा और विजय दर्डा सांसद, विधायक और मंत्री रहे। 'विजया कर्नाटक' और 'कन्नड़ प्रभा' अखबार से जुड़े रहे प्रताप सिम्हा भाजपा से दो बार लोकसभा पहुंचे। उनका नाम चर्चा में तब आया, जब उनके द्वारा अनुमोदित विजिटर पास से दो युवकों ने नई संसद में पहुंच कर हंगामा किया।

मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ तक सितारों की जगमगाहट- मूलतः पत्रकारिता से सार्वजनिक जीवन में आने वाले मोतीलाल वोरा मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री और लंबे समय तक कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे श्यामाचरण शुक्ल ने रायपुर से 'दैनिक महाकौशल' अखबार निकाला। भाजपा के मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ दोनों राज्यों के अध्यक्ष रहे लखीराम अग्रवाल ने बिलासपुर से 'लोकस्वर' अखबार निकाला। बिलासपुर के पत्रकार बीआर यादव मध्यप्रदेश सरकार में मंत्री और चार बार विधायक रहे। बिलासपुर के ही रहने वाले कवि, पत्रकार श्रीकांत वर्मा कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और राज्यसभा के सदस्य रहे। वे 'दिनमान' के संपादक मंडल में रहने के बाद राजनीति में आए। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के रहने वाले चंदूलाल चंद्राकर दैनिक 'हिन्दुस्तान' के संपादक रहे। बाद में कांग्रेस ने उन्हें राज्यसभा में भेजा। राजनांदगांव के पत्रकार लीलाराम भोजवानी छत्तीसगढ़ सरकार में श्रम मंत्री रहे। 'देशबन्धु' में पत्रकारिता का पाठ पढ़ने वाले चंद्रशेखर साहू छत्तीसगढ़ से सांसद, मंत्री और विधायक रहे। मध्यप्रदेश में सीहोर के पत्रकार शंकर लाल साहू विधायक रहे। त्रिभुवन यादव पिपरिया से विधायक चुने गए। कांग्रेस सरकार में मंत्री रहे और दो बार विधायक चुने गए विष्णु राजोरिया मूलतः पत्रकार ही हैं, बाद में उन्होंने 'शिखर वार्ता' पत्रिका भी निकाली। मप्र में ही केएन प्रधान सांसद, विधायक और मंत्री भी रहे। नागपुर के अंग्रेजी अखबार 'हितवाद' के प्रकाशन करने वाले बनवारी लाल पुरोहित कांग्रेस और भाजपा दोनों से लोकसभा पहुंचे। संप्रति वे पंजाब के राज्यपाल हैं।

भाजपा हो या कांग्रेस, सबने दिये मौके- कांग्रेस ने राजीव शुक्ला, प्रफुल्ल कुमार माहेश्वरी, कुमार केतकर, विजय दर्डा आदि को राज्यसभा से नवाजा। राजीव शुक्ला मनमोहन सरकार में केंद्रीय मंत्री भी रहे। वरिष्ठ पत्रकार संजय निरुपम लोकसभा पहुंचे और मुंबई कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। 'सामना' के संपादक संजय राऊत अपने धारदार बयानों के लिए लोकप्रिय हैं, वे भी राज्यसभा सदस्य हैं। जनता दल (यू) ने प्रभात खबर के संपादक रहे हरिवंश को दो बार राज्यसभा भेजा, वह इन दिनों राज्यसभा के उपसभापति भी हैं। 'ऑर्गनाइजर' के संपादक रहे श्री के.आर.मलकानी बाद में राज्यसभा पहुंचे। भारतीय जनता पार्टी ने चंदन मित्रा, दीनानाथ मिश्र, बलबीर पुंज, राजनाथ सिंह सूर्य, नरेन्द्र मोहन, प्रभात झा, तरुण विजय, स्वप्नदास गुप्ता को राज्यसभा भेजा। इनमें मित्रा बाद में तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए, जबकि पुंज और झा पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रहे। प्रभात झा मध्यप्रदेश भाजपा के चर्चित अध्यक्ष भी रहे। भाजपा और कांग्रेस दोनों दलों में रह चुके वरिष्ठ पत्रकार एमजे अकबर किशनगंज से कांग्रेस से लोकसभा पहुंचे। बाद में भाजपा ने उन्हें राज्यसभा भेजा और विदेश राज्य मंत्री बनाया।

भाषाई पत्रकारों को भी मिले अवसर- तृणमूल कांग्रेस ने हाल में ही अंग्रेजी की पत्रकार सागरिका घोष को राज्यसभा भेजा है। इसके पूर्व उर्दू पत्रकारिता से जुड़े रहे नदीमुल हक भी राज्यसभा में पहुंचे। हिंदी अखबार 'सन्मार्ग' के मालिक विवेक गुप्ता तृणमूल से सांसद भी रहे, अब विधानसभा में हैं। कुणाल घोष भी इसी दल से राज्यसभा पहुंचे। हिमाचल प्रदेश के उप मुख्यमंत्री मुकेश कौशिक भी मूलतः पत्रकार हैं। वह दिल्ली और शिमला में पत्रकारिता की लंबी पारी के बाद राजनीति में आए। हरियाणा के अंबाला लोकसभा क्षेत्र से 2014 में भाजपा सांसद चुने गए अश्विनी कुमार अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन 'पंजाब केसरी' के माध्यम से की गई उनकी धारदार पत्रकारिता लोगों के जेहन में है। 'इकोनॉमिक टाइम्स' में रहे देवेश कुमार बिहार में भाजपा से विधान परिषद में है और प्रदेश महामंत्री भी हैं। हरियाणा सरकार में वित्त मंत्री रहे कैप्टन अभिमन्यु भी दैनिक 'हरिभूमि' के संपादक, प्रकाशक रहे हैं। उर्दू के पत्रकार शाहिद सिद्दीकी (नई दुनिया) सपा से, तो मीम अफजल (अखबार-ए-नौ) कांग्रेस से राज्यसभा पहुंचे। आंध्र प्रदेश से 'वार्ता' के संपादक गिरीश सांघी कांग्रेस से राज्यसभा हो आए। पत्रकारिता से जुड़े रहे तेलंगाना के के. केशवराव कांग्रेस और टीआरएस दोनों दलों से राज्यसभा जा चुके हैं। कोलकाता के पत्रकार अहमद सईद मलीहाबादी भी राज्यसभा पहुंचे। जनता दल यूनाइटेड से एजाज अली भी राज्यसभा (2008 से 2010) में रहे। कुछ राजनीति की देहरी से भी लौट आए, जैसे वरिष्ठ पत्रकार उदयन शर्मा (कांग्रेस) और सीमा मुस्तफा जनता दल के टिकट पर लोकसभा नहीं पहुंच सके।

राजनीति के मंच पर ऐसे अनेक सितारे चमके और अपनी जगह बनाई। तमाम ऐसे भी थे, जो पार्टी के प्रवक्ता या बौद्धिक कामों से जुड़े रहे। तमाम अज्ञात ही रह गये। राजनीति वैसे भी एक कठिन खेल है, संभावनाओं से भरा भी। किंतु सबको इसका फल मिले यह जरूरी नहीं। बावजूद इसके इसका आकर्षण कम नहीं हो रहा। वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी कहते थे, 'पत्रकार की पोलिटिकल लाइन तो ठीक है, पर पार्टी लाइन नहीं होनी चाहिए।' किंतु यह लक्ष्मण रेखा भी टूट रही है। क्यों इस पर सोचिए जरूर।

लोक नायक प्रभु श्री राम के आदर्श

भगवान विष्णु का राम अवतार समरसता समाहित संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए हुआ। इसलिए वे प्रभु के साथ ही साथ मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाते हैं।राज संतान होने के बाद भी वन-वन भटके, संकटों व चुनौतियां का सामना किया। उन्होंने लोक जीवन निर्वाह जिस समरसता के साथ किया, उससे वे लोक के रोम-रोम में बस गये।

उनके प्रत्येक व्यवहार में लोक सदा विद्यमान रहा है।

चिंतन

शीला मिश्रा

लेखिका साहित्यकार हैं।

गीतों, कथाओं, मुहावरों, कहावतों, बधाई, सोहर, भक्ति, शक्ति, अभिवादन, विदाई अर्थात हमारे प्रत्येक संस्कार में प्रभु श्रीराम विद्यमान रहते हैं। जब स्त्री गर्भवती होती है तो जो गीत गाये जाते है उनमें आने वाली संतान की राम रूपी कल्पना ही कि जाती है। प्रत्येक माता की यह कामना केवल यह कि उसका पुत्र राम के गुणों से युक्त हो। प्रत्येक युवती की चाह कि उसे श्रीराम सा पति मिले। वैवाहिक गीतों में भी राम - सीता की सी जोड़ी की कल्पना की जाती है। वास्तव में हमारी पूरी लोक संस्कृति राममय है।

शासक कैसा हो,यह विचार करें तो राम जैसा सामान्य जन दुखहारी, सुखकारी, दीन दुखी का उद्धारकर्ता जैसा। राम का संपूर्ण जीवन लोक हित समर्पित रहा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति राम राज्य की ही कल्पना करता है। राम में अद्भुत संगठन क्षमता थी। शत्रु सेना का मुकाबला करने हेतु संसार के प्रत्येक प्राणी की सहायता स्वीकारी चाहे गिलहरी हो या कि वानर सेना। नल व नील की तथा वनवासी प्राणियों की मदद से इतना विशाल बांध बना तो उसी पर चलकर वानर सेना समुद्र पार कर सकी। योद्धा वानर समूह गरजते हुए निकल रहे-

बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा
देखि कृपानिधि के मन भावा
चली सेन कछु बरनि न जाई
गर्जहिं मर्कट भर समुदाई

एक बार जिससे भी मित्रता हो गई उसके साथ उन्होंने आत्मिक रिश्ता अंत तक निभाया। वे पराक्रमी होने के साथ दयालु भी थे, इसीलिए मानव हो या दानव, पशु हो या पक्षी, जड़ हो या चेतन सब पर उन्होंने दयाभाव रखकर सहायता की। रावण से शत्रु की विद्वत्ता का सम्मान कर उन्होंने मृत्यु शैय्या पर लेटे रावण से ज्ञान ग्रहण करने लक्ष्मण को भेजा। लोकाचार श्रीराम के आचरण से सहज ही समझा जा सकता है। लोक जीवन के सभी मानवीय गुण सहनशीलता क्षमा, दया, विनम्रता आदि श्रीराम में सहज रुप से विद्यमान थे। सबसे महत्वपूर्ण बात श्रीराम ने अपने सहयोगियों से सदा मित्रवत व्यवहार किया,जो हमारे लोकाचार व संस्कृति में प्रभु श्रीराम आचरण से अभिसिंचित हैं।

वन में रहते श्रीराम ने वनवासियों को एक सूत्र में बांधा। उन्हें परिवार की धारणा, रीति-रिवाज व धर्म का मार्ग दिखाया। इस तरह सब जातियों व संप्रदायों को एक सूत्र में बांधकर अखंड भारत की स्थापना की। क्रोध, मोह, अहंकार जैसे लौकिक अवगुणों पर श्रीराम ने नियंत्रण पा लिया था। परशुराम प्रभु श्रीराम संवाद प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसीलिए प्रत्येक परिस्थिति में संयम रखने के साथ कहा जाता है - जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।

जन-मन में राम ऐसे समाये हैं कि घर या बाहर मिलने पर राम-राम कहकर आपसी अभिवादन करते हैं तथा अंत समय में 'हे राम' कहकर संसार से विदा लेते हैं। और लोक द्वारा अंतिम विदाई भी 'राम नाम सत्य' कहकर दी जाती है। वास्तव में राम लोक नायक हैं। वे कण-कण में बसे हुए हैं। आइए, इस रामनवमी पर हम सब प्रभु श्रीराम के सुकृत्यों को अपनाने का संकल्प लें, तभी सनातन परंपरा की रक्षा होगी।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

यशवंत गोरे

(व्यंग्यकार एवं लेखक)

घरेलु जिंदगी में चुनाव का असर

चुनावों की घोषणा होते ही सारा वातावरण चुनाव मय हो गया है। अख़बार, टीवी के न्यूज चैनल के साथ सदैव हाथ में रहने वाले मोबाईल के सोशल मिडिया पर केवल चुनाव से जुड़ी ख़बरों से दिल और दिमाग में में चुनाव- चुनाव की घूमता रहता है। सुबह उठते ही बाथरूम में ब्रश करने जाओ तो सामने दो-तीन तरह के पेस्ट और पावडर सामने दिखाई देते है। आपको हवन सामग्री युक्त पेस्ट , दांतों की झनझनाहट दूर करने वाला, नीम -नमक दांतों का मजबूत करने वाला पेस्ट या दांतों को मजबूत और मोती जैसे चमकाने वाला पाउडर में किसी एक का चुनाव करना होता है। ब्रश कर चाय की टेबल पर बैठो तो आपके सामने विकल्प रख दिए जाते है ग्रीन टी पियोगे कि दूध -हल्दी या चाय इनमें से किसी एक का चुनाव करना होता है। चाय से साथ अख़बार पढ़ने की आदत पुरानी हो तो दिनभर टीवी देखने के बाद भी चाय के साथ अख़बार पढ़ने का आनंद ही कुछ और है और फिर घर में तीन-तीन अख़बार आते हो तो किस अख़बार को पहले पढ़ा जाय इसका भी चुनाव करना पड़ता है। अख़बार खोलो तो चुनाव के अलावा दूसरी ख़बरें चुन -चुन कर पढ़नी पड़ती है। अख़बार पढ़कर थोड़े फुर्सत होते ही श्रीमती जी तीन-चार तरह की सब्जी सामने रख देती है , चुनाव कर के बताओं क्या बनाना है? टीवी का रिमोट हाथ में आते ही यह समस्या सामने आती है कि किस चैनल का चुनाव किया जाए जिस पर 'चार सो पार' के अलावा और कोई खबर देखने को मिले।

मोबाइल हाथ में लो तो वहाँ भी यह चुनाव करना पड़ता है कि सोशल मीडिया में सबसे पहले क्या देखे पहले व्हाट्सएप के मेसेज देखे या फेसबुक ,एक्स (ट्विटर) या फिर इंस्ट्राग्राम। सुबह से श्रीमती जी द्वारा याद दिला दिया जाता है कि शाम को एक पार्टी में जाना है। पार्टी में जाने से पहले कौन सी ड्रेस पहन कर जानी है , इसका चुनाव करना होता है। किसी पार्टी के लिए चुनाव में उम्मीदवार की चयन की प्रक्रिया कठिन होती है, उससे कम कठिन काम नहीं है पार्टी में जाने के लिए ड्रेस का चुनाव। महिलाओं के लिए तो और भी कठिन। साड़ियों से भरी अलमारी में कौनसी साड़ी चयन करना सत्ताधारी पार्टी के लिए एक सीट पर उम्मीदवारों की भीड़ में एक के चयन करने जैसा है। हमारे सामने तो श्रीमती जी ने कुर्ता - पाजामा, जोधपुरी सूट, टॉय -सूट, पेंट -शर्ट, पठानी सूट निकाल कर रख दिये। इनमें से एक का चुनाव अब हमें करना था कि क्या पहने। यह कार्य उतना ही कठिन था जैसे चुनाव में मतदाता के सामने उम्मीदवार अपना रिश्तेदार हो या पसंदीदा पार्टी या फिर मित्र में से किसी एक को चुनाव में जिताना है। सर पर बाल नहीं होने से एक प्रश्न और खड़ा हो जाता है कि टोपी कौनसी पहनी जाए।

व्यंगकार को विभिन्न प्रकार की टोपियां संग्रह करने का शौक है, हर राज्य की टोपी संग्रह में है। उनमें किसी एक का चुनाव करना होता है कि निमंत्रण देने वाला किस राज्य से प्रेम करने वाला है। तैयार होकर नजर शू रेक पर जाती है तो, फिर चुनाव की बात सामने होती है कि पैरों में क्या पहना जाए स्पोर्ट्स शूज, सैंडल, चमड़े के जूते या फिर चप्पल अटका के चल दें। गिफ्ट देने के भी कई विकल्प में से किसी एक का चुनाव करने के लिए आपके सामने विकल्प लिफाफा देने का, अच्छी सी गिफ्ट खरीद कर देने या फिर खाली गुलदस्ता देने से काम चलाया जा सकता है, होते है। कुछ भले लोग कार्ड में 'कृपया उपहार न लाये' लिखकर आपको इस समस्या से मुक्त कर देते है।

शादी जैसी पार्टियों में सबसे बड़ी चुनौती खाने के स्टालों के चुनाव की होती है कि कहाँ से शुरू किया जाय। जिस तरह किसी राजनीतिक पार्टी के मेनिफेस्टो में आपको अच्छी बातें देखनी पड़ती है, वैसे ही लगे हुए काउंटर पर मेन्यू में क्या -क्या है फ़ास्ट - फ़ास्ट देखना पड़ता है और फिर चुनाव कर खाना पड़ता है या फिर मेनकोर्स के रोटी के काउंटर की भीड़ में शामिल होना है। देश में चुनाव तो पांच साल में एक बार होते है और प्रतिनिधि चुनना पड़ता है, पर निजी जिंदगी में तो हमें रोज ही चुनाव प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

शिक्षा

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

पाठ्य पुस्तकों में आर्यों का बदलने लगा इतिहास

राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) की पुस्तकों में पढ़ाए जाने वाले भारत के इतिहास में आर्य अब आक्रमणकारी नहीं, बल्कि भारतीय मूल के रूप में दर्शाए गए हैं। 21 वर्ष की खींचतान और दुनियाभर में हुए अध्ययनों के बाद आखिरकार यह तय हो गया कि 'आर्य सभ्यता' भारतीय ही थी। राखीगढ़ी के उत्खनन से निकले इस सच को देश के पाठ्यक्रमों में शामिल करने का श्रेय 'राखीगढ़ी मैन' के नाम से प्रसिद्ध हुए प्राध्यापक वसंत शिंदे को जाता है। एनसीईआरटी की कक्षा 12वीं की किताबों में बदलाव किया गया है। इसमें इतिहास की पाठ्य पुस्तक में 'ईंट, मोती और हड्डियांःहड़प्पा सभ्यता' नामक पाठ में आर्यों को मूल भारतीय होना बताया है। इसके अलावा कक्षा 7, 8, 10 और 11 के इतिहास और समाजशास्त्र के पाठ्यक्रमों में भी बदलाव किया गया है।

इतिहास तथ्य और घटना के सत्य पर आधारित होता है। इसलिए इसकी साहित्य की तरह व्याख्या संभव, नहीं है। विचारधारा के चश्मे से इतिहास को देखना उसके मूल से खिलवाड़ है। परंतु अब आर्यों के भारतीय होने के संबंधी एक के बाद एक शोध आने के बाद इतिहास बदला जाने लगा है। इस सिलसिले में पहला शोध स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के टॉमस कीवीशील्ड ने किया था। 2003 में 'अमेरिकन जर्नल ऑफ ह्यूमन जेनेटिक्स' में प्रकाशित इस शोध-पत्र में सबसे पुरानी जाति और जनजाति के वंशाणु (जीन) के आधार पर आर्यों के भारत का मूल निवासी बताया गया था। हालांकि वर्ष 2009 में वाराणसी हिंदू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. लालजी सिंह और प्रो थंगराज ने भी आनुवांशिक परीक्षण के बाद आर्यों को मूल भारतीय बताया था। 2019 में प्रो वसंत शिंदे द्वारा राखीगढ़ी उत्खनन से मिले 4000 साल पुराने वंशाणु की जांच में सबसे बड़ा सच सामने आया। शोध में पाया गया कि राखीगढ़ी से मिला जीन वर्तमान के प्रत्येक भारतीय व्यक्ति में उपलब्ध हैं। इसके आधार पर यह तथ्य स्थापित हुआ कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति आर्यों के द्वारा निर्मित है। एनसीआरईटी के इतिहास पाठ्यक्रम निर्धारण समिति के अध्यक्ष बनने पर प्रो शिंदे ने इस तथ्य के आधार पर पाठ्यक्रम में संशोधन कराए हैं। इसी पुस्तक में मराठा शासक छत्रपति शिवाजी के नाम के साथ छत्रपति और महाराज जोड़ा गया है। इसी तरह कक्षा 12वीं के समाजशास्त्र विषय के पाठ्यक्रम से सांप्रदायिक दंगों के चित्र हटाए गए है। इतिहास पुस्तकों में यह बदलाव सिनौली-राखीगढ़ी में हुए उत्खननों में मिले साक्ष्यों के आधार पर संभव हुआ है।

गोया, अब यह अवधारणा पलट गई है कि आर्य न तो विदेशी थे और न ही उन्होंने कभी भारत पर आक्रमण किया। अतएव आर्य भारत के मूल निवासी थे। हरियाणा के हिसार जिले के राखीगढ़ी में की गई पुरातत्वीय खुदाई में 5000 साल पुराने मिले दो मानव कंकालों के डीएनए अध्ययन के निष्कर्ष से यह धारणा सामने आई है। इन कंकालों में एक पुरुष और एक स्त्री का था। इनके कई नमूने लेकर उनका आनुवांशिक अध्ययन पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, भारत सरकार, डेक्कन विश्व-विद्यालय पुणे, सीसीएमबी हैदराबाद और हार्वड स्कूल ऑफ मेडिसन बोस्टन यूएसए ने किया है। इस डीएनए विश्लेषण में यह भी स्पष्ट हो गया है कि आर्य और द्रविड़ मूल भातीय हैं। राखीगढ़ी हड़प्पा सभ्यता के सबसे बड़े केंद्रों में से एक है। करीब 300 एकड़ में फैले इस क्षेत्र में पुरातत्वविदों ने 2015 में उत्खनन किया था।

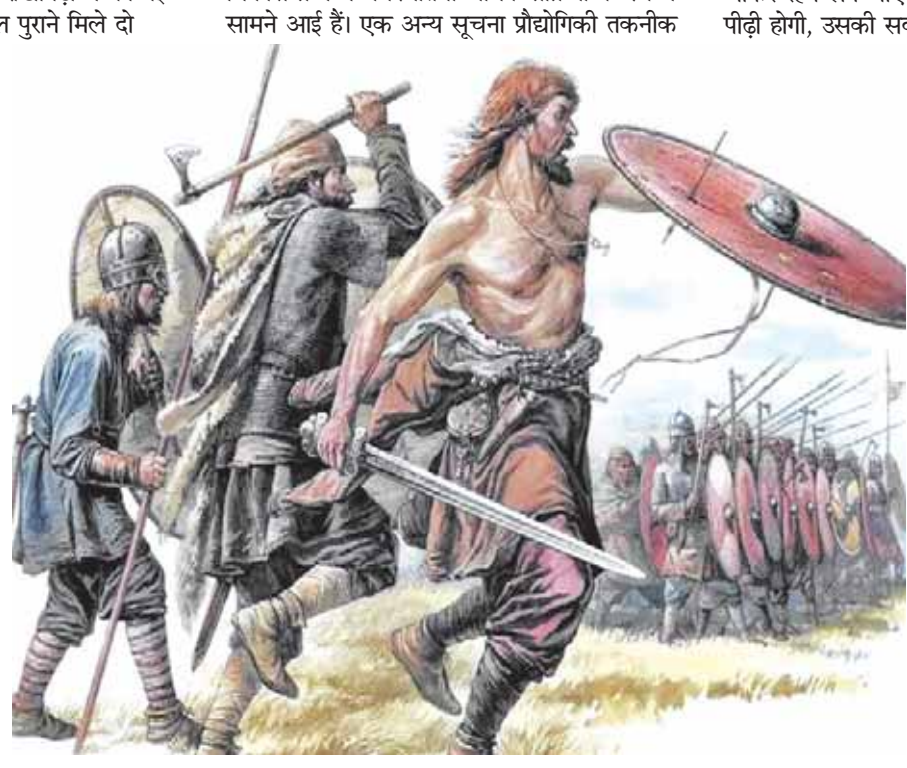

आर्य हमलावर के रूप में विदेश से आए होते और नरसंहार किया होता तो मानव कंकालों के शरीर पर घावों के निशान होते। भारतीय संस्कृति और भाषाएं नष्ट हो गई होतीं। ऐसा होता तो आक्रमण की बात सिद्ध होती। व्यापार व पर्यटन आदि के लिए भारत में विदेशी समय-समय पर आते रहे हैं और भारतीय भी विदेश जाते रहे हैं। इन कारणों से जीन में मिलावट होती रही हैं। साफ है, आर्य भारत के ही थे। प्रोफेसर शिंदे ने राखीगढ़ी के उत्खनन के समय बताया था कि अलग-अलग खुदाई में 106 से भी ज्यादा नर-कंकाल मिले हैं। साथ ही भिन्न आकार व आकृति के हवन-कुंड और कोयले के अवशेष मिले हैं। तय है भारत में 5000 साल पहले हवन होते थे। यहीं सरस्वती और इसकी सहायक दृश्यवंती नदी के किनारे हड़प्पा सभ्यता के निशान मिले हैं। ये लोग सरस्वती की पूजा करते थे।

ये आनुवांशिक अनुसंधान ऐतिहासिक-अवधारणाओं को बदलने के आधार बने हैं। 'आर्यों' के ऊपर 'आनुवंशिकी' आनुवांशिक के आधार पर इसके पहले भी एक शोध सामने आया है। उससे तय हुआ है कि भारतीयों की कोशिकाओं का जो आनुवंशिकी ढ़ांचा है, वह बहुत पुराना है। डीएनए के आधार पर एक महत्वपूर्ण खोज से साबित हुआ है कि भारत के बहुसंख्यक लोगों के दक्षिण भारतीय दो आदिवासी समुदाय पूर्वज हैं। मानव इतिहास के विकास क्रम में ये स्थितियां जैविक प्रक्रिया के रुप में सामने आई हैं। एक अन्य सूचना प्रौद्योगिकी तकनीक द्वार किए गए अध्ययन ने तय किया है कि भगवान श्रीकृष्ण हिन्दू मिथक और पौराणिक कथाओं के काल्पनिक पात्र न होकर एक वास्तविक चरित्र नायक थे और कुरुक्षेत्र के मैदान में हकीकत में महाभारत युद्ध लड़ा गया था।

आनुवांशिक संरचना के आधार पर हैदराबाद की संस्था 'सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी' के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए इस शोध से जो निष्कर्ष सामने आए थे, उनसे स्पष्ट हुआ था कि मूल भारतीय ही 'आर्य' थे। इस शोध का आधार भारतीयों की कोशिकाओं का आनुवंशिक ढांचा है, जिसका सिलसिलेवार अध्ययन किया गया। जिससे तय हुआ कि भारतीयों की कोशिकाओं का संरचनात्मक ढांचा पांच हजार साल से भी ज्यादा पुराना है। इस आधार पर यह कहानी एकदम निराधार साबित हो जाती है कि भारत के लोग 3.5 हजार साल पहले किसी दूसरे देश से आक्रमणकारियों के रूप में यहां आए थे। यदि आए होते तो हमारा आनुवांशिक ढांचा भी 3.5 हजार साल से ज्यादा पुराना नहीं होता। क्योंकि जब वातावरण बदलता है तो आनुवंशिक ढांचा भी बदल जाता है। इस तथ्य को इस मिसाल से समझा जा सकता है, मसलन हमारे बीच से कोई व्यक्ति आज अमेरिका या ब्रिटेन जाकर रहने लग जाए तो उसकी जो चैथी-पांचवीं पीढ़ी होगी, उसकी सवा-डेढ़ सौ साल बाद आनुवांशिक संरचना अमेरिका या ब्रिटेन निवासियों जैसी होने लग जाएगी। क्योंकि इन देशों के वातावरण का असर उसकी आनुवांशिक संरचना पर पड़ेगा।

भारतीय संस्कृति के निर्माता और वेदों के रचियता आर्य भारत के मूल निवासी थे। यदि प्राचीन भारतीय इतिहास को भारतीय दृष्टि से देखें तो आर्य भारत के ही मूल निवासी थे। पाश्चात्य इतिहास लेखकों ने पौने दो सौ साल पहले जब प्राच्य विषयों और प्राच्य विद्याओं का अध्ययन शुरु किया तो बड़ी कुटिल चतुराई से जर्मन विद्वान व इतिहासविद् मैक्समूलर ने पहली बार 'आर्य' शब्द को जाति सूचक शब्द से जोड़ दिया। वेदों का संस्कृत से जर्मनी में अनुवाद भी पहली बार मैक्समूलर ने ही किया था। ऐसा इसलिए किया गया जिससे आर्यों को अभारतीय घोषित किया जा सके। जबकि वैदिक युग में 'आर्य' और 'दस्यु' शब्द पूरे मानवीय चरित्र को दो भागों में बांटते थे। प्राचीन साहित्य में भारतीय नारी अपने पति को 'आर्य-पुरुष' अथवा 'आर्य-पुत्र' नाम से संबोधित करती थी। इससे यह साबित होता है कि आर्य श्रेष्ठ पुरुषों का संकेत-सूचक शब्द था। ऋग्वेद, रामायण, महाभारत, पुराण व अन्य संस्कृत ग्रंथों में कहीं भी आर्य शब्द का प्रयोग जातिसूचक शब्द के रुप में नहीं हुआ है। आर्य का अर्थ 'श्रेष्ठि' अथवा 'श्रेष्ठ' भी है। वैदिक युग में तो वैसे भी जाति व्यवस्था थी ही नहीं। हां, वर्ण व्यवस्था जरूर अस्तित्व में आ गई थी। इसके अलावा वेद तथा अन्य संस्कृत साहित्य में कहीं भी उल्लेख नहीं है कि आर्य भारत में बाहर से आए। यदि आर्य भारत में बाहर से आए होते तो प्राचीन विपुल संस्कृत साहित्य में अवश्य इस घटना का उल्लेख व स्पष्टीकरण होता।

ताजा शोधों का सार है कि सबसे पहले 65 हजार साल पहले अंडमान और दक्षिण भारत में लोगों का आगमन और आबादी का क्रम शुरू हुआ। इसके करीब 25 हजार साल बाद भारत में लोगों के आने का सिलसिला शुरू हुआ। इस अध्ययन दल के निदेशक डॉ लालजी सिंह का कहना था कि हम सब भारतीय उत्तर और दक्षिण के इन आदि पुरखों की ही संताने हैं। सवर्ण-अवर्ण जातियों और आदिवासियों के आनुवंशिक गुण व लक्षण कमोबेश एक जैसे हैं। इसलिए आर्य और द्रविड़, अनार्य के परिप्रेक्ष्य में कोई विभाजित रेखा खींचने की जरूरत नहीं रह जाती ? इस अध्ययन से सामने आया है कि जब भारतीय समाज में निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई तब अलग-अलग कबीलों या समूहों से जातियों का उदय हुआ। फलस्वरूप अखण्ड भारत का उत्तर और दक्षिण भारत में विभाजन तो व्यर्थ है ही कबीले और जातियां भी बेमानी हैं क्योंकि सभी भारतीय समुदाय व जातियां एक ही कुटुम्ब से विकसित हुए हैं।

ये शोध भाषा, रंग और नस्ल जैसे भेद भरे विभाजक छद्म को भी नामंजूर करते हैं। दरअसल उत्तर और दक्षिण के विभाजन की बात तो अंग्रेज हुक्मरानों ने बांटों और राज करो के दृष्टिकोण के चलते की थी। उन्नीसवीं शताब्दी में योरोपीय विचारकों ने अपने वंशों के लोगों को श्रेष्ठ साबित करने के नजरिए से रंग व नस्ल के आधार पर श्रेष्ठता की अवधारणा गढ़ी। मसलन गोरा रंग श्रेष्ठ माना गया। इसी के अनुसार गोरे, गेहुएं और तांबई त्वचा वाले उत्तर भारतीय श्रेष्ठ और काले या सांवले रंग वाले दक्षिण भारतीय हेय मान लिए गए। उत्तर की भाषा संस्कृत और दक्षिण की भाषाओं को भिन्न परिवारों में रखा गया। जबकि इन सभी भाषाओं की जननी संस्कृत रही है। गंगा घाटी से आयरलैंड तक की भाषाएं एक ही आर्य परिवार की आर्य भाषाएं हैं। इसी कारण इन भाषाओं में लिपि एवं उच्चारण की भिन्नता होने के बावजूद अपभ्रंशी समरूपता है और इन भाषाओं का उद्गम स्त्रोत संस्कृत है। इससे भी यह निश्चित होता है कि आदिकाल में एक ही परिवार की आर्य भाषाएं बोलने व लिखने वाले पूर्वज कहीं एक ही स्थान पर रहे हैं। बंगाली इतिहासकार ए.सी. दास इस स्थान अथवा मूल भारतीयों का निवास स्थल 'सप्त सिंधु' मानते हैं जो पंजाब में था। अब आर्यों के मूल भारतीय होने की अवधारणा को मान्यता मिल रही हैं। तब इतिहास के इस तथ्य के बदलाव को केवल शालेय पुस्तकों में परिवर्तन तक सीमित न रखते हुए उच्च शिक्षा में भी बदलाव किए जाने जरूरी हैं। अतएव नए शोधों से आए परिणाम की इस सैद्धांतिकी को स्वीकारा जाना चाहिए।

दृष्टिकोण

राजीव शर्मा

लेखक पूर्व आईएएस हैं।

अपने बच्चों के कपड़े चुराता समाज

भारत के लोक कल्याण कारी राज्य ने दशकों पहले सरकारी स्कूलों के बच्चों को मुफ़्त गणवेश देना प्रारंभ किया। कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को लक्षित कर प्रारंभ हुई इस योजना का विस्तार कक्षा आठ तक सभी वर्गों समुदायों तक समान रूप से करने का भी स्वागत हुआ।

गणवेश की गुणवत्ता और खरीदी प्रक्रिया विवादित होने लगी तो सरकारों ने जिलों को खरीदी के अधिकार दे दिये। तब भी बवाल थमा नहीं। विकेन्द्रीकरण का फैशन आया तो नीति

बदलकर पालक संघों को बजट दे दिया। अब शिकायतें चार गुनी हो गई। सुधार का हर प्रयास बच्चों के गणवेश को झीना और झीना करता चला गया। तब राम बाण औषधि मानकर बच्चों अभिभावकों के खाते में गणवेश की राशि भेजी गई। सदिच्छा की दुर्दशा करते हुए अधिकांश परिवारों ने इस राशि को प्रसाद की पंजीरी मानकर खा पी लिया। बेचारे बच्चे घरेलू कपड़ों में स्कूल जाने लगे। हैरान परेशान शासन ने नीति फिर बदली और स्वयं सहायता समूहों को गणवेश प्रदाय का आदेश किया। उसकी परिणीति की भव्यता आप अपने पड़ोस के सरकारी स्कूल से जान सकते हैं जहां सत्रांत और ड्रेस वितरण एक साथ हुआ।

सवाल नीति का नहीं नीयत का है। लालच के लकवे ने नख से शिख तक अपंग कर दिया हो तो व्यवस्था की गत द्रोपदी से बेहतर नहीं होती। अपने ही मासूम बच्चों के वस्त्र हरण में लगा यह समाज विश्व गुरु होने का बोझ उठा पायेगा?

विचार

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

अयोध्या में भरत का शासनकाल

रामराज्य को दुनिया की श्रेष्ठ शासन प्रणाली माना जाता है। महाराज दशरथ के परलोकगमन के पश्चात और श्रीराम के राजा बनने से पहले चौदह वर्षों तक भरत ने अयोध्या का राजकाज सम्हाला। उन्होंने स्वयं राजगद्दी पर बैठने के बजाय, श्रीराम की चरण पादुकाओं को सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया। चरणपादुकाएं उन सिद्धांतों और मर्यादित आचरण का प्रतीक हैं जिसमें श्रीराम दृढ़ता से खड़े रहते हैं। अर्थात् भरत ने राघवेंद्र सरकार से प्राप्त मार्गदर्शन के अनुरूप सत्ता का संचालन किया। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरित मानस' में लिखा है कि भरत चरणपादुकाओं से अनुमति लेकर काम करते थे। 'मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति'। रामराज्य की श्रेष्ठता के कारण भरत के शासन काल की अधिक चर्चा नहीं होती। जबकि भरत ने भी अत्यंत कुशलतापूर्वक अयोध्या की राज्य व्यवस्था सम्हाली। इसका प्रमाण महर्षि व्यास कृत ब्रह्माण्ड पुराण के उत्तरखंड का हिस्सा अध्यात्म रामायण के युद्ध कांड में मिलता है जिसमें वनवास के उपरांत अयोध्या लौटे श्रीराम से भरत कहते हैं- प्रभो! मुझे धरोहर रूप में सौंपे हुए आपके इस राज्य को मैं फिर आपको ही सौंपता हूँ। हे जगन्नाथ! आपके प्रताप से मैंने अन्न-भंडार, सेना और कोश आदि पहले से दस गुने कर दिए हैं। 'कोष्ठागारं बलं कोशं कृतं दशगुणं मया'।

भरत अयोध्या के राजा नहीं बनना चाहते थे। वे अपने बड़े भाई श्रीराम का आदर भक्ति की सीमा तक करते थे। उनके लिए श्रीराम के स्थान पर स्वयं को राजा बनने की कल्पना करना भी असंभव था। यद्यपि उनकी माता कैकेयी ने महाराज दशरथ द्वारा पूर्व में उन्हें दिए गए वचनों की याद दिलाते हुए दो वरदान माँग लिए थे, पहला, अपने पुत्र अर्थात् भरत को अयोध्या का राज्य और दूसरा, श्रीराम को चौदह वर्षों का वनवास। श्रीराम के साथ सीता और लक्ष्मण भी जंगल चले जाते हैं। इस दुख में दशरथ अपने प्राण त्याग देते हैं। इस घटनाक्रम के समय भरत और शत्रुघ्न अपनी ननिहाल में थे। गुरु जी उन्हें तत्काल वापस बुलाते हैं। अयोध्या पहुँचकर भरत पर जैसे वज्रपात हो गया, श्रीराम के वनवास का कारण स्वयं को जानकर वे अत्यंत दुखी हो जाते हैं। वे पिता के अंतिम संस्कार के पश्चात श्रीराम को वापस लाने चित्रकूट जाते हैं। वे भलीभाँति जानते थे कि श्रीराम वनवास की अवधि पूरी होने से पूर्व अयोध्या नहीं लौटेंगे। भरत फिर भी अपने अग्रज को मनाने जाते हैं और अपने समर्पण, भक्ति और विनय से चौदह सालों बाद अयोध्या आकर राजगद्दी सम्हालने हेतु श्रीराम की स्वीकृति प्राप्त कर लेते हैं। यह बात इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कैकेयी ने भरत को राजा बनने का वरदान सीमित अवधि के लिए नहीं माँगा था, वनवास के पश्चात श्रीराम अयोध्या लौटते तब भी राजा भरत ही रहते। भरत अपने उद्देश्य में सफल होते हैं कि चौदह वर्षों बाद राघव अयोध्या के नरेश होंगे। वे अयोध्या से इतर, नंदीग्राम में रहते हुए राजकाज करने लगते हैं।

अयोध्या के शासन का संचालन करने के लिए श्रीराम द्वारा दिए गए सूत्र और स्वयं भरत की कार्यप्रणाली का गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीराम चरित मानस' में संक्षिप्त किंतु सारगर्भित वर्णन किया है। श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के वनगमन के समय महाराज दशरथ के कहने पर सुमंत्र उन तीनों को रथ में बिठाकर जंगल में ले जाते हैं। श्रृंगवेरपुर से सुमंत्र को वापस लौटाते हुए राघव भरत के लिए संदेश भेजते हैं कि राजा का पद पाने पर नीति न छोड़ देना, मन, वचन और कर्म से प्रजा का पालन करना और सब माताओं को समान जानकर सेवा करना। हे भाई! पिता, माता और स्वजनों की सेवा करके भाईपने को अंत तक निभाना। पिता जी को ऐसे रखना कि वे मेरा सोच न करें। यह सीख तब दी गई थी जब महाराज दशरथ जीवित थे।

दशरथ जी के न रहने पर भरत चित्रकूट जाते हैं। वे चौदह वर्षों तक अयोध्या का राज काज सम्हालने के लिए श्रीराम से सीख देने की आर्त भाव से विनती करते हैं। राघव उन्हें समझाते हैं कि तुम्हारी, मेरी, परिवार, घर और वन की सारी चिंता गुरु वशिष्ठ और महाराज जनक जी को है। गुरुदेव, मुनि विश्वामित्र और मिथिलापति के होते, हमें, तुम्हें स्वप्न में भी क्लेश नहीं है। मेरा, तुम्हारा परम पुरुषार्थ, स्वार्थ, सुयश, धर्म और परमार्थ इसी में है कि हम दोनों भाई पिता जी की आज्ञा का पालन करें। माता-पिता, गुरु और स्वामी की आज्ञा मानने से पैर कभी कुमार्ग पर नहीं पड़ते। ऐसा विचारकर चिंता छोड़ अवध जाकर अवधि भर उसका पालन करो। देश, खजाना, परिवार, कुटुम्ब आदि की जिम्मेदारी तो गुरु जी सम्हाल लेंगे। तुम तो मुनि वशिष्ठ जी, माताओं और मंत्रियों की सलाह मानकर तदनुसार पृथ्वी, प्रजा और राजधानी की रक्षा करते रहना। भरत की व्यग्रता को शांत करके श्रीराम उन्हें अत्यंत सुंदर प्रतीक से राजधर्म का सार समझाते हैं- मुखिया को मुख के समान होना चाहिए, जो खाने-पीने को तो अकेला है, परंतु विवेकपूर्वक सभी अंगों का पालन-पोषण करता है। श्रीराम की शिक्षा का सार यही है कि राजा को निरंकुश नहीं होना चाहिए, राजकाज में योग्य व्यक्तियों की सलाह लेते हुए सबकी समुचित देखभाल करनी चाहिए।

श्रीराम की चरणपादुकाएं लेकर भरत अयोध्या लौट आते हैं। जनक जी चार दिन अयोध्या में रुके, समस्त इंतजाम किया और मंत्री, गुरु जी और भरत को राज्य सौंपकर मिथिला चले गए। नगरवासी गुरु जी की सीख मानकर श्रीराम के वापस लौटने की प्रतीक्षा में नियम उपवास करते हुए भोग, सुखों को त्यागकर रहने लगे। भरत ने मंत्रियों और विश्वस्त सेवकों को यथोचित दायित्व सौंप दिए। शत्रुघ्न को शिक्षा दी और माताओं की सेवा में नियुक्त कर दिया। विद्वत्समाज से निवेदन किया कि वे कोई भी आज्ञा देने में संकोच न करें। भरत ने परिजनों और नागरिकों को सब प्रकार से संतुष्ट कर सुखपूर्वक बसाया। फिर उन्होंने शत्रुघ्न के साथ जाकर गुरु जी से नियमपूर्वक रहने की आज्ञा प्राप्त की और सुदिन देख चरणपादुकाओं को राजसिंहासन पर विराजित कराया। वे गुरुदेव और कौशल्या माँ को सिर नवाकर पादुकाओं से आज्ञा ले नंदिग्राम में पर्णकुटी बनाकर रहने लगे। भरत सिर पर जटाजूट बना, मुनियों के वल्कल वस्त्र धारणकर पृथ्वी को खोदकर उसके अंदर कुश का आसन बिछाकर रहने लगे। श्रीराम के वन में निवास करने के कारण भरत भी प्रेमपूर्वक भोजन, वस्त्र, बर्तन, व्रत, नियम आदि में ऋषियों के तुल्य आचरण करने लगे। उन्होंने तन, मन और वचन से समस्त सुख-सुविधाओं, वस्त्राभूषण, भोग-विलास का त्याग कर दिया।

भरत ने अपने आचरण से सिद्ध किया कि वैराग्य धारण कर लेने पर भी राजकाज का सफलतापूर्वक संचालन किया जा सकता है। वे पूरी सतर्कता एवं सजगता से श्रीराम की धरोहर, अयोध्या की देखभाल करने लगे। उन्होंने गुरुदेव, माताओं, परिजनों से लेकर छोटे-बड़े सभी की सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा। माना जाता है कि श्रीराम और सीता जी की सुरक्षा के लिए वन में चौदह वर्ष लक्ष्मण सोये नहीं, वे रात भर जागते हुए वीरासन में बैठकर पहरा देते थे। भरत भी चौदह सालों तक श्रीराम की अयोध्या की रक्षा के लिए सजगता पूर्वक जागा करते थे। इसका प्रमाण है, हनुमान जी द्वारा राम-रावण युद्ध के दौरान लक्ष्मण के प्राण बचाने के लिए द्रोण पर्वत को लेकर जानेवाली अद्भुत घटना। रात के समय पहाड़ को लेकर जा रहे बजरंग बली अयोध्या के ऊपर से गुजरते हैं, तब भरत उन्हें कोई राक्षस समझकर बाण मारकर गिरा देते हैं। ऐसा तभी संभव था जब भरत रात्रि में जागरण कर चौकसी कर रहे होते। जिस देश का राजा अपनी प्रजा के कल्याण के लिए इतना सजग हो, वहाँ की सेना, कर्मचारी और नागरिक स्वयं कितने सदाचारी, कुशल और कर्मठ होंगे, अनुमान लगाया जा सकता है।

देवताओं की राजधानी अमरावती से बढ़कर ऐश्वर्यशाली अयोध्या में ऋषि-मुनियों की भाँति विरागी जीवन बिताते हुए शासन करना तथा चौदह वर्षों में राज्य के वैभव को दस गुना बढ़ा देने की विलक्षण प्रतिभा के कारण तुलसी बाबा ने भरत के लिए सही ही कहा है- 'सब बिधि भरत सराहन जोगू' अर्थात् सभी प्रकार से भरत प्रशंसा के योग्य हैं।

चुनाव का बहिष्कार नहीं करेंगे, लेकिन भाजपा कार्यकर्ता दबाएंगे नोटा की बटन

• भाजपा प्रत्याशी को भाजपा कार्यकर्ताओं ने सुनाई खरी-खरी

बैतूल/मुलताई। विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी को अपनी ही पार्टी के कार्यकर्ताओं के असंतोष का सामना करना पड़ रहा है। हाल ही में ग्राम महतपुर चुनाव प्रचार करने गए सांसद डीडी उईके को भरी सभा में ग्राम के सेवानिवृत्ति शिक्षक होशियार सिंह तुरिया ने जमकर खरी-खोटी सुनाई, जिसका वीडियो क्षेत्र में जमकर वायरल हो रहा है। इस वायरल वीडियो की एक विशेषता यह भी है कि ग्राम महतपुर के भाजपा कार्यकर्ता शिक्षक तुरिया की बात का ताली बजाकर समर्थन करते दिखाई दे रहे हैं। वायरल हो रहे वीडियो में ग्राम महतपुर मे भाजपा चुनाव सभा चल रही है जिसमें भाजपा प्रत्याशी डीडी उइके, भाजपा विधायक चंद्रशेखर देशमुख सहित भाजपा नेता दिखाई दे रहे हैं जिसे महतपुर निवासी वरिष्ठ भाजपा नेता चतुर सिंह तुरिया सेवानिवृत शिक्षक संबोधित करते हुए ,अपने सांसद प्रत्याशी पर पिछले चुनाव में कसम खाकर किए गए वादा पूरा नहीं करने के आरोप लगाते दिखाई दे रहे हैं और कह रहे हैं कि हम चुनाव का बहिष्कार तो नहीं करेंगे लेकिन जितने भी ग्राम के भाजपा के लोग हैं वह नोटा का बटन दबाएंगे।

स्कूल बात कही तो कॉल अटेंड करने को तैयार नहीं सांसद- वायरल वीडियो के अनुसार भाजपा कार्यकर्ता शिक्षक तुरिया सभा में कहते दिखाई दे रहे हैं कि हमने हाई सेकेंडरी स्कूल के आवेदन की बात कही तो सांसद हमारी कॉल अटेंड करने को तैयार नहीं है क्या यह राजनीति है, क्या यह लोकतंत्र है, हमने लोकतंत्र मे बच्चों को गड़ा है लोकतंत्र क्या होता है कि जनप्रतिनिधि जीत कर चला जाए और उसके बाद हम उसके पीछे चक्कर काटे। हम मानते हैं कि लोकतंत्र के नाते हम उनकी पूजा करने को तैयार है वह हमारे देवता है वह हमारा प्रतिनिधित्व करते हैं हमारी मांग गैर मांग नहीं है 2008 को स्कूल खुला है हमारे बच्चे कैसे रहते हैं कैसे पढ़ते हैं वह देखिए चलके, क्या यह आपका दायित्व नहीं है। जैसे आप यहां आज आए है ऐसा साल में एक बार आकर हाथ हिलाने को मोहताज थे कि आप हाथ हिला दे कि हम महतपुर आए हैं।

महतपुर ने दिए है चपरासी से लेकर कलेक्टर- शिक्षक तुरिया भाजपा नेताओं को वायरल वीडियो मे बता रहे हैं कि महतपुर ने चपरासी से लेकर कलेक्टर तक दिए हैं यह गांव अनपढ़ गवारों का गांव नहीं है। वैसे तो हम सहज सरल है हम ऐसी बात करना नहीं चाहते नहीं तो हम कल चुनाव का बहिष्कार कर दे फिर आप चाहे हमें गोली मरवा दे कोई बात नहीं हम लोकतंत्र जीने वाले लोग हैं। जब महत्वपूर्ण से बाजार चलती है 80 प्रतिशत एक तरफ मत पड़ते हैं और अन्य ग्राम भी इसके साथ जोड़ते हैं हमारे सर जी ने भगवान रामचंद्र जी के छायाचित्र पर हाथ रखकर बोला था की मासाब जो काम आप मांग रहे हैं मैं करके दूंगा मैं वही बात दोहराना चाहता हूं, हम मांग नहीं कर रहे है हमने मांग समाप्त कर दी, 30 सालों में सांसद निधि का 1 रुपया हमारे गांव को नहीं मिला है क्या इसलिए हम भाजपा को 80 और 90 प्रतिशत वोट देते हैं। हमने विधायक से भी कहा था कि हमें सरपंच को पालने वाला काम मत दो ठोस काम चाहिए, ताकि हमारे बाल बच्चों रोजी रोजगार मिले। हम चुनाव का बहिष्कार नहीं करेंगे लेकिन जितने भी भाजपा के लोग हैं वह नोटा का बटन दबाएंगे इसके लिए हम चर्चा करेंगे। हमने इस संबंध में नगर मीडिया प्रभारी राघवेंद्र रघुवंशी से चर्चा की तो उन्होंने कहा कि वायरल वीडियो के संबंध में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं को जानकारी दी गई है उनसे चर्चा के बाद ही बयान जारी किया जाएगा।

बाबा साहेब जयंती पर नेहरू पार्क चौक पर हुए विविध आयोजन

निकाली विशाल रैली, सांसद, विधायक सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी हुए शामिल

बैतूल। रविवार को संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 133 वीं जयंती पूरे जिले भर में हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर कई कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। जिला मुख्यालय पर नेहरू पार्क चौक स्थित अंबेडकर प्रतिमा पर सुबह से ही उनके अनुयायी बड़ी संख्या में पहुँचे और प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस मौके पर सांसद दुर्गादास उईके, बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, बैतूल नपाध्यक्ष पार्वती बारस्कर सहित अन्य जनप्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक भी सम्मिलित हुए। उन्होंने बाबा साहेब अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद विशाल रैली भी निकाली गई।

20 वर्षों से बंटी वासनिक द्वारा किया जा रहा आयोजन- पिछले 20 वर्षो से प्रतिवर्ष नगर पालिका बैतूल के सेवानिवृत्ति सीनियर ऑडिटर बंटी वासनिक के द्वारा अम्बेडकर जंयती पर विविध कार्यक्रम किए जा रहे है। इसी तारतम्य में इस वर्ष भी सीनियर ऑडिटर बंटी वासनिक की तरफ से कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मौके पर इन्होंने अपनी ओर से वहां मौजूद लोगों को मट्ठा और शरबत वितरित किया। कार्यक्रम के आयोजन को लेकर कई लोगों ने इनकी प्रशंसा भी की। श्री वासनिक द्वारा उपस्थित लोगों से बाबा साहेब के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया गया। नेहरू पार्क चौक पर स्थित कार्यक्रम में उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा भीम क्रांति पुस्तक-2023 का विमोचन भी किया गया। यह पुस्तक रामदास पाटिल द्वारा प्रकाशित की गई है। अंबेडकर जयंती पर अलग-अलग संगठनों द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

बस स्टैंड पर खड़ी बस में अचानक लगी आग, ड्राइवर कंडक्टर एवं क्लीनर की सूझबूझ से टला बड़ा हादसा

बैतूल। भैंसदेही से बैतूल -सारणी टाईम लेकर जा रही महाराजा बस क्र. 1857 बस स्टैंड गुदगांव चौपाटी पर सवारी लेने के लिए रुकी हुई थी कि अचानक वायर शॉट होने से बस का हार्न तेजी से बजने लगा और देखते ही देखते बस में आग लग गई जिससे बस में सवार यात्रियो में हड़कम्प मच गया । बस के ड्राइवर कंडेक्टर, क्लीनर एवं बस एजेंट की सूझबूझ से तत्काल सभी यात्रियों को बस से नीचे उतारा गया तथा पानी की मदद से तत्काल आग को बुझाया गया। जिससे बड़ा हादसा होते-होते टल गया । संभावना व्यक्त की जा रही है कि वाहन में अचानक शार्ट सर्किट होने के कारण आग लगी थी जिसे सूझबूझ के चलते आग पर काबू पा लिया गया तथा एक बड़ी दुर्घटना होते-होते टल गई । लोगों में चर्चा है कि अगर बस गुदगांव बस स्टैंड पर खड़ी रहने की बजाय सडक़ पर चलती हुई रहती तो कोई बड़ी दुर्घटना घटित हो सकती थी । ड्राइवर 'कंडक्टर क्लीनर एवं बस एजेंट की सूझबूझ की लोगों ने तारीफ की है।

आमला पुलिस ग्राउंड में हुआ भीम क्रांति का विमोचन

स्वास्थ्य शिविर लगा, रैली निकाली, पंचशील, बुद्ध वंदना हुई

बैतूल। भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 133वीं जयंती विभिन्न गतिविधियों के आयोजन के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जयंती की पूर्व संध्या पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन आमला मे किया गया। इसके अलावा 14 अप्रैल को करूणा बौद्ध विहार भीमनगर से रैली निकाली गई, जो पूरे नगर का भ्रमण करते हुए पुलस ग्राउंड पहुंची। इस दौरान रैली में बाबा साहेब के नारे लगाए गए। अतिथियों द्वारा संविधान के शिल्पकार बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर पर बैतूल की आवाज समाचार पत्र बैतूल के संपादक आर.डी. द्वारा प्रकाशित स्मारिका भीम क्रांति का विमोचन किया गया।

जयंती के पूर्व संध्या पर लगे स्वास्थ्य शिविर में 350 मरीजों का निःशुल्क इलाज एवं दवाओं का वितरण किया गया। इस दौरान विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, डॉ. नितेश चौकीकर, डॉ. शिल्पा हुरमाड़े, डॉ. चित्रा पाटिल, डॉ. दिलीप चौकीकर, डॉ. अरूण जयसिंगपुरे, डॉ. ब्रजेश वामनकर, सुशील मसतकर आदि मौजूद थे। इस दौरान मेधावी छात्र-छात्राओं को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। सभी अतिथियों को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। समाजसेवी चंद्रशेखर पण्डोले और शिक्षा के क्षेत्र में अशोक खातरकर को सम्मानित किया गया। मंच संचालन शिवप्रसाद गुजरे ने किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूज्य भन्ते शिलारत्न एवं भिक्खू संघ, डॉ. योगेश पंडाग्रे, नपाध्यक्ष नितिन गाडरे, पूर्व नपाध्यक्ष मनोज मालवे, पूर्व नपाध्यक्ष लाजवंती अशोक नागले, नपा उपाध्यक्ष राजेंद्र उपाध्याय, चंद्रकांता हुरमाड़े सुजाता महिला मंडल आदि मौजूद थे एवं कार्यक्रम के आयोजनकर्ता कार्यक्रम अध्यक्ष यशवंत झरबड़े, महासचिव, गणपति उबनारे, सह सचिव अरविंद बर्डे, उपाध्यक्ष दिलीप दवंडे, सचिव हरिदास पाटिल, कोषाध्यक्ष नवीन नागले आदि थे।

मतदान सामग्री के परिवहन के लिए सिर्फ शासकीय वाहन का ही उपयोग करें: आब्जर्वर श्री ठाकुर

आब्जर्वर श्री प्रदीप ठाकुर की उपस्थिति में सेक्टर अधिकारियों का प्रशिक्षण दो सत्र में

बैतूल। सेक्टर ऑफिसर्स अपने-अपने सेक्टर के सभी मतदान दलों का सामग्री प्राप्ति स्थल से मतदान केन्द्र तक और मतदान कार्यवाही के बाद सामग्री संग्रहण केन्द्र तक अनिवार्यतः निर्धारित शासकीय वाहन में ही परिवहन करें। यह निर्देश आब्जर्वर प्रदीप ठाकुर ने प्रशिक्षण सत्र में सेक्टर अधिकारियों को दिए। उन्होंने सेक्टर ऑफिसर को उनके दायित्व, आदर्श आचरण संहिता का पालन, सेक्टर के रूट, मतदान केन्द्रों में एएमएफ की पर्याप्तता के निर्देश दिए। लोकसभा निर्वाचन 2024 के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुक्रम में सोमवार को दो पालियों में 5 विधानसभा क्षेत्रों के सेक्टर अधिकारियों को निर्वाचन संबंधी प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद, विधानसभा क्षेत्र के सभी एसडीएम भी उपस्थित थे। मुख्य ट्रेनर श्री विजयंत ठाकुर द्वारा निर्वाचन कार्यों से संबंधित दायित्वों का बिन्दुवार विवरण पर प्रशिक्षण दिया गया। दो पालियों में इस प्रशिक्षण के प्रथम सत्र में मुलताई, आमला और बैतूल विधानसभा क्षेत्र के सेक्टर अधिकारियों ने भाग लिया। द्वितीय सत्र में दोपहर 2.30 बजे से 5.00 बजे तक

घोड़ाडोंगरी और भैंसदेही विधानसभा क्षेत्र के सभी अधिकारी और प्रशिक्षणार्थी उपस्थित थे। इस दौरान निर्वाचन कार्य में आने वाली कठिनाइयों के संबंध में विस्तृत चर्चा कर उनका निराकरण किस प्रकार करना है, इस संबंध में सभी सेक्टर अधिकारियों को प्रशिक्षण में अवगत कराया गया। सेक्टर अधिकारियों को प्रशिक्षण के साथ ही मतदान हेतु अवसर प्रपत्र भी उपलब्ध कराए गए।

मॉक पोल के दायित्व- मतदान केन्द्र पर सुविधा एवं मॉक पोल के संबंध में भी पूर्व प्रक्रिया से अवगत कराया गया। मॉक पोल के बारे में मॉक पोल कर डेटा निरस्त कर निर्वाचन के लिए मशीन तैयार करने हेतु अवगत कराया गया। पीठासीन अधिकारियों के कार्य में सहयोग करने के निर्देश दिए। 85 वर्ष से अधिक उम्र के मतदाताओं के संबंध में भी विस्तृत प्रक्रिया की जानकारी दी गई। निर्वाचन कार्य के पूर्व मतदान दिवस के दिन एवं मतदान के पश्चात जमा किए जाने वाले विभिन्न प्रपत्रों में विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में पीपीटी के माध्यम से भी बारिकियों पर चर्चा कर सेक्टर अधिकारियों के प्रश्नों का सटीक निराकरण भी किया गया।

चमकविहीन गेहूं के उपार्जन में 30 प्रतिशत लस्टर लॉस के साथ शासन से प्राप्त निर्देशों का पालन सुनिश्चित हो : कलेक्टर

बैतूल। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने जिले में असामयिक वर्षा एवं ओलावृष्टि के चलते गेहूं की फसल प्रभावित (लस्टर लॉस) हो जाने के कारण रबी विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर गेंहू उपार्जन में 0 से 30 प्रतिशत तक लस्टर लॉस बगैर वैल्यू कट के उपार्जन करने के निर्देश प्रदान किए हैं। इन निर्देशों के परिपालन में समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन के संबंध में 30 प्रतिशत तक लस्टर लॉस उपार्जित गेहूं पर पूर्ण समर्थन मूल्य की राशि मय राज्य बोनस (2275+125) रु 2400 के किसानों को भुगतान किया जाएगा। इसके अलावा लस्टर लॉस गेहूं के बोरों पर 5 मार्क लगाकर पृथक से स्टेकिंग कराई जाएगी तथा उपार्जन केन्द्र के लॉगिन से लस्टर लॉस गेहूं की मात्रा एवं प्रतिशत की जानकारी अनिवार्यतः पोर्टल पर प्रविष्टि कराई जाएगी।

उपार्जन केन्द्र पर चमकविहीन गेहूं के बोरों पर स्याही, लाल कलर से मार्किंग (उदाहरण के रूप में 5) करके अलग से थप्पी लगाया जाना अनिवार्य है तथा बोरों पर स्याही/लाल कलर इस प्रकार से लगाया जाए कि 5 का निशान स्पष्ट रूप से दर्शित हो। उपार्जन केन्द्रों में चमकविहीन गेहूं प्राप्त होने पर उपार्जन केन्द्र द्वारा किसानवार चमकविहीन गेहूं की अलग-अलग थप्पियां लगाकर संग्रहण किया जाए तथा किसानवार गेहूं की चमक विहीन प्रतिशत का रिकार्ड भी रखा जाए।

ट्रक चालान पर चमकविहीन गेहूं का प्रतिशत किया जाए अंकित- आदेशानुसार उपार्जन केन्द्रों में एफएक्यू एवं चमकविहीन गेहूं का पृथक-पृथक ट्रकों में परिवहन कराया जाए एवं प्रत्येक ट्रक चालान पर चमकविहीन गेहूं का प्रतिशत अंकित किया जाए। एक ट्रक में दोनों प्रकार के गेहूं का परिवहन नहीं कराया जायेगा। उपार्जन एजेंसी के गोदाम प्रभारी की जिम्मेदारी होगी की यह संग्रहण में चमकविहीन गेहूं की प्राप्ति होने पर किसानवार बोरों का परीक्षण करेगा एवं किसानवार चमकविहीन गेहूं के प्रतिशत का मैन्युअल एवं ऑनलाइन जारी किये जाने वाले स्वीकृति पत्रक में प्रविष्टि करेगा। इसके अलावा उपार्जन संस्थाओं से प्राप्त चमकविहीन गेहूं के ट्रक चालानों में चमकविहीन का प्रतिशत नहीं होने पर अथवा भारत सरकार द्वारा चमकविहीन के स्वीकृत प्रतिशत से अधिक चमकविहीन पाये जाने पर ऐसे ट्रकों को भण्डारण हेतु स्वीकार नहीं किया जाएगा एवं संबंधित उपार्जन केन्द्रों को वापस किया जायेगा।

संस्थावार स्टेक लगाकर चमकविहीन गेहूं कराया जाए भंडारित - आदेश के अनुसार भण्डारण एजेंसी के संग्रहण केन्द्र प्रभारी का दायित्व होगा कि संग्रहण हेतु प्राप्त एफएक्यू एवं चमकविहीन गेहूं का उपार्जन संस्थावार पृथक-पृथक स्टेक लगाये जाए। गेहूं के स्टेक कार्ड में गेहूं के एफएक्यू अथवा चमकविहीन होने का पूर्ण विवरण अंकित किया जायेगा, जिसमें ट्रक चालान में उल्लेखित चमकविहीन प्रतिशत को दर्ज किया जायेगा।

भंडारण एजेंसी द्वारा स्वयं के संयुक्त भागीदारी योजना एवं अन्य अनुबंधित गोदाम मालिकों को लिखित में निर्देशित किया जाए की एफएक्यू एवं चमकविहीन गेहूं को पृथक-पृथक संस्थावार स्टेक लगाकर भंडारित कराया जाए।

गोदाम में कार्यरत कर्मियों को देंगे प्रशिक्षण- चमकविहीन गेहूं का उपार्जन, परिवहन, भंडारण एवं उसके प्रतिशत के निर्धारण इत्यादि हेतु उपार्जन कार्य में संलग्न कर्मियों यथा उपार्जन संस्था प्रभारी, कम्प्यूटर ऑपरेटर, सर्वेयर तथा उपार्जन, भडारण एजेंसी के गोदाम में कार्यरत कर्मियों को प्रशिक्षण उपार्जन एजेंसी द्वारा दिया जाएगा।

प्रत्याशी, व्यय लेखा रजिस्टर का 23 और 30 अप्रैल एवं 3 मई को करा सकेंगे निरीक्षण: कलेक्टर

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अनुक्रम में बैतूल लोकसभा प्रत्याशी अपने व्यय लेखा पंजीयन का निरीक्षण 23, 30 अप्रैल एवं 3 मई को करा सकेंगे। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने जारी अपने आदेशों में कहा कि प्रत्याशियों को व्यय लेखा रजिस्टर के निरीक्षण के लिए नाम निर्देशन के समय उन्हें सौंपी गई व्यय लेखा पंजी की सही प्रतिलिपि जिला निर्वाचन अधिकारी के समक्ष दाखिल करनी होगी।

जारी आदेशों के अनुसार व्यय लेखा पंजी के निरीक्षण के लिए 3 तिथियां निर्धारित की गई है। प्रथम निरीक्षण के लिए 23 अप्रैल 2024 को सुबह 10 बजे से शाम 5.00 बजे तक पंजी की सही प्रति दाखिल कराई जा सकेगी। द्वितीय निरीक्षण 30 अप्रैल को 2024 को प्रातः 10 से 5 बजे तक एवं तृतीय निरीक्षण के लिए पंजी की सत्य प्रतिलिपि 3 मई को प्रातः 10 बजे से 5.00 बजे तक दाखिल की जा सकेगी। सही प्रति का लेखा निरीक्षण जिला पंचायत के सभाकक्ष में किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि किसी अभ्यर्थी द्वारा निर्वाचन व्यय लेखा के अनुरक्षण में असफलता धारा 171-झ के तहत एक निर्वाचन अपराध है। भारत निर्वाचन आयोग के नियमों में निहित प्रावधानों के अनुसार प्रत्येक प्रत्याशी के लिए निर्वाचन व्यय की अधिकतम सीमा 95 लाख निर्धारित की गई है। इस व्यय पंजी में निर्वाचन से संबंधित व्यय की एंट्री की जाना है। व्यय लेखा के अनुसार व्यय की अधिकतम सीमा निर्धारित राशि से ज्यादा नहीं होगी। आदेशानुसार प्रत्याशी स्वयं अथवा अपने निर्वाचन एजेंट के माध्यम से या विधिवत प्राधिकृत व्यक्ति द्वारा व्यय प्रेक्षक निरीक्षण के लिए प्रदा विहित प्राधिकारी के समक्ष अपना दैनिक व्यय रजिस्टर मूलतः भुगतान संबंधी समस्त भुगतान शुदा/बकाया देयक, निर्वाचन व्यय हेतु पृथक से खोले गए बैंक खाते की निर्वाचन तिथियों एक दिन पूर्व तक अद्यतन बैंक की पासबुक व अन्य संबंधी दस्तावेज प्रस्तुत करेंगे।

कलार समाज की कन्या पूजन कार्यक्रम में विधायक खंडेलवाल का सम्मान

समाज के अध्यक्ष के अनुसार होगी भगवान सहस्त्रबाहु मूर्ति की स्थापना

बैतूल। ग्रीष्मकालीन चैत्र नवरात्र के पांचवें दिन शनिवार को टिकारी क्षेत्र के मालवीय वार्ड में स्थित कलचुरी कलार समाज के मंगल भवन में आयोजित कन्या पूजन भोजन कार्यक्रम में कलचुरी कलार समाज के अध्यक्ष तपन मालवीय ने बताया की हमारे आराध्य देव सहस्त्रबाहु की प्रतिमा स्थापित किए जाने हेतु जिला जेल गेट के बाजू में भूमि स्वीकृत हो चुकी है जहां आने वाले कुछ दिनों में भगवान सहस्त्रबाहु की प्रतिमा स्थापित की जाएगी। जिसके लिए धनराशि भी एकत्रित की जा रही है। रात्रि 8 बजे से कलार मंगल भवन टिकारी में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के मुख्य आतिथ्य में क्षत्रिय कलचुरी कलार समाज के अध्यक्ष तपन मालवीय की अध्यक्षता में एवं भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला एवं नगर पालिका उपाध्यक्ष महेश राठौर , समाज के सचिव मनोज मालवीय, समाज के जिला संयोजक प्रवीण पम्मा बिहारे, कोषाध्यक्ष देवेंद्र राय, भवानी मालवीय एवं शिरीष पटेल के विशेष आतिथ्य में नवरात्रि के पावन पर्व पर शक्ति की भक्ति के साथ जगत जननी माता दुर्गा की झांकी सजी-धजी देवी तुल्य छोटी-छोटी कन्याओं का सभी स्वजातीय पुरुषों व महिला शक्ति ने पूजन कर कन्या भोज के साथ सुंदर-सुंदर उपहार भेंट

कर कार्यक्रम को प्रारंभ किया।

इस अवसर पर समाज के अध्यक्ष तपन मालवीय द्वारा अथ गणपति अथर्वशीर्ष का पाठ किया गया और समाज की आगामी कार्य योजना पर प्रकाश डालते हुए बड़ी संख्या में एकत्रित सामाजिक बंधुओं एवं शक्ति स्वरूपा महिलाओं को समाज की एकता व अखंडता के लिए आह्वान किया। साथ ही संगीत में भजन एवं सुंदरकांड का भाव विभोर गायन गीता बाल समाज रामायण मंडल गंज द्वारा किया गया। इस अवसर पर सम्मानीय अतिथियों द्वारा प्रभु श्री राम एवं माता का पूजन कर आराधना की गई । तत्पश्चात सभी स्वजातीय बंधुओं के साथ अतिथियों ने भोजन प्रसादी ग्रहण किया।

कलचुरी कलार समाज के आराध्य देव भगवान सहस्त्रार्जुन की प्रतिमा स्थापित किए जाने के लिए नगर पालिका बैतूल को दिए आवेदन के फलस्वरूप 19 अगस्त 2023 को आयोजित पीआईसी की बैठक में उक्त स्थल में भगवान सहस्त्रबाहु की प्रतिमा स्थापित किए जाने की स्वीकृति नगर पालिका द्वारा कर दी गई है । इसकी जानकारी देते हुए समाज के अध्यक्ष तपन मालवीय ने बताया इस पुनीत कार्य के लिए बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल का विशेष सहयोग रहा है। इसके लिए समाज की ओर से श्री मालवीय ने विधायक श्री खंडेलवाल के प्रति आभार प्रदर्शित किया। और समाज की ओर से विधायक श्री खंडेलवाल को स्मृति चिन्ह और शाल श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया । नगर पालिका बैतूल द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव में उल्लेख किया गया है कि इंदिरा कन्या शाला एवं जिला जेल गेट के कॉर्नर में भगवान सहस्त्रबाहु की प्रतिमा स्थापित होगी जिसमें होने वाले व्यय सामाजिक सहयोग से किया जाएगा वहीं पेड स्टेल निर्माण में होने वाला व्यय नगर पालिका द्वारा वहन किया जाएगा।

धन राशि होने लगे एकत्रित-

समाज के सक्रिय अध्यक्ष तपन मालवीय ने बताया कि भगवान सहस्त्रबाहु की प्रतिमा स्थापित किए जाने के लिए धनराशि एकत्रित की जारी है। जिसमें समाज के पूर्व कार्यकारी जिला अध्यक्ष केके मालवीय ने 2 लाख 51 हजार रुपए, एडवोकेट नवनीत मालवीय ने 1 लाख 51 रुपए देने की घोषणा की है । वहीं समाज के अध्यक्ष तपन मालवीय स्वयं 51000 की राशि देंगे। नवरात्रि के अवसर पर कलार समाज द्वारा आयोजित इस गरिमामय कार्यक्रम में प्रमुख रूप से के.के. मालवीय, वरिष्ठ एडवोकेट नवनीत मालवीय, वरिष्ठ पत्रकार राधेश्याम सिन्हा, महेश मालवीय, डॉ सुमित मदरेले, डॉ प्रकाश मालवीय, डॉ आनंद मालवीय सहित मातृशक्ति में संध्या जायसवाल, निर्मला चौधरी ,पुष्पा मालवीय, आभा मालवीय, अनामिका मालवीय, भारती मालवीय ,राजकुमारी राय, बबीता मालवीय ,निर्मला मालवीय, नमिता बिहारे, ललित मालवीय, डॉक्टर प्रियंका मालवीय, शीतल राय, अनीता मालवीय इत्यादि भारी संख्या में स्वजातीय बंधु उपस्थित रहे । कार्यक्रम का संचालन प्रवीण पम्मा बिहारे ने एवं आभार प्रदर्शन पूर्व पार्षद एवं समाज के सचिव मनोज मालवीय ने किया।

MANTRA OF SUCCESS

राजेश शर्मा

सिनियर जर्नलिस्ट
मोटिवेशनल स्पीकर

कला की चमक से चमत्कृत करता कला का नन्हा साधक 'आरव नायक'

कागज, स्टील के टुकड़ों, बटन, कील और नट से बनाई प्रभु श्रीराम, राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू , मोदी, लता मंगेशकर, रतन टाटा की कलाकृतियां चर्चित

'अगर सूरज की तरह रोशनी बिखेरना है तो रोज उगना पड़ेगा' ये पंक्तियाँ सटीक बैठती है महज 13 बरस की छोटी उम्र के बड़े कलाकार पर ... इंटरनेट मीडिया पर उनके बनाएं पोट्रेट और कलाकृतियों की इन दिनों खासी चर्चा है... कागज के टुकड़े, स्टील के टुकड़ों, बटन, किल और नट से बनाई आर्टिफिशियल कलाकृतियां ऐसी मानों जीवंत हो उठी हो... जोश और जुनून ऐसा कि कला का यह नन्हा साधक कैनवास पर बड़ी- बड़ी कलाकृतियों को ऐसे उकेरता है मानों हूबहू कला बातें कर रही हो.. आईल पैंटिंग, मौजेक आर्ट, थ्रेड आर्ट, कागज के टुकड़ों, स्टील के टुकड़ों और किल तथा नट से बनाये पोट्रेट देख हर कोई अचंभित रह जाता है कला के इस छोटे से साधक की साधना से... कला की चमक से चमत्कृत करता कला का यह नन्हा साधक 'आरव हरीश नायक' धारा नगरी की आभा को देश भर में गुंजायमान किए हुए है... आरव की सफलता इसलिए भी मायने रखती है कि छोटे से शहर की यह नन्ही प्रतिभा किसी बड़े संस्थान या किसी बड़े प्रशिक्षकों द्वारा तराशी नहीं गयी है बल्कि अपने पिता ख्यातनाम कलाकार हरीश नायक और बड़े भाई उज्जवल नायक के पदचिन्हों पर चल एक सच्चे साधक की साधना की कहानी है.

साढ़े 4 किलो लंबे धागे और 386 कील से प्रभु श्रीराम की तस्वीर बनाई...

अयोध्या में रामलला के दिव्य और भव्य उत्सव रामोत्सव को समर्पित इस नन्हे कलाकार ने कई दिनों

साधना कर साढ़े 4 किलो लंबे धागे और कैनवास पर 386 कील से प्रभु श्रीराम की तस्वीर बनाई जिसे काफी सराहा गया.. प्रभु श्रीराम की यह तस्वीर सोशल मीडिया के कई प्लेटफार्म पर चर्चा में रही.

15 दिन लगे राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू का पोट्रेट तैयार करने में.....

आरव की कला के प्रति दीवानगी देखते ही बनती है.. करीब 15 दिनों की अथक मेहनत कर 4 किलो 250

ग्राम वजनी करीब 7 हजार नट की सहायता से राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू का पोट्रेट तैयार किया.. यह पोट्रेट देखते ही बनता है..

पीएम मोदी की बनाई तस्वीर, इंटरनेट पर सबसे ज्यादा लोकप्रिय रही....

यह नन्हा आर्टिस्ट देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से खासा प्रभावित है. कई दिनों की तैयारी और परिश्रम से 3564 कागज के छोटे छोटे टुकड़ों से पीएम मोदी को

समर्पित बनाई तस्वीर इंटरनेट पर सबसे ज्यादा लोकप्रिय रही.. मोदी जी से जल्द मुलाकात की आस लिए यह कला का साधक 4800 बटन से भी मोदी की तस्वीर तैयार कर चुका है..

11 हजार स्टील के टुकड़ों से 2 दिन में स्वर कोकिला लता मंगेशकर का पोट्रेट बना कर अनूठे अंदाज में श्रध्दांजलि दी...

7 हजार स्टील के टुकड़ों से मशहूर उद्योगपति रतन टाटा का पोट्रेट बनाया....

नन्ही सी उम्र में मिले अनेक सम्मान ....

आरव की कला साधना और तपस्या के चलते उन्हें कई सम्मान भी हासिल हो चुके है और यह कारवां लगातार चलता ही जा रहा है.. हाल ही में बंजारा रत्न सम्मान धार गौरव दिवस- बसंतोत्सव पर धार गौरव सम्मानविवेकानंद केंद्र, जिला प्रशासन और प्रदेश की कई संस्थाओं द्वारा आरव को सम्मानित कर उसकी कला साधना को प्रोत्साहित किया है...

होशंगाबाद की हलचल..

संजीव डे राय

चुनाव हो रहे या नहीं..? यह नजर नहीं आ रहा..!

लोकतंत्रीय उत्सव चुनाव को लेकर यहां कोई आनंद, कोई उत्साह या कोई हलचल दिखाई नहीं दे रहा फिर पार्टी कार्यकर्ताओं में चुनाव को लेकर ना कोई उमंग है ना जोश या यूं कहें कि उत्साह नजर नहीं आ रहा जो सभी को चौंकाता है, राजनीतिक विश्लेषक हैरान हैं आखिर इस दफा यह चुनावी दौर उत्साह हीन कैसा.? जिसमें ना कोई शोर-शराबा है, न किसी पोस्टर बैनर न वोट मांगने वालों का लाव-लश्कर नजर आ रहे, क्षेत्र में पार्टियों के झंडे डंडे तक नजर नहीं आ रहे। जबकि सच यही है कि लोकसभा के चुनाव निकट है और मतदान 26 अप्रैल को होना तय है जो चुनाव आयोग द्वारा घोषित है। चुनाव नीरसता का कारण पार्टी के नेताओं को मोदी जी द्वारा यह थोपा गया उम्मीदवार नापसंद तो नहीं..? उधर दूसरी तरफ कार्यकर्ता विहीन कांग्रेसी उम्मीदवार को भाजपा उम्मीदवार से बेहतर उम्मीदवार बताया जा रहा लेकिन उनकी मजबूरी उन्हें जन जन तक पहुंचने के क्षेत्र में कार्यकर्ता ही नहीं... और भाजपाई के पास कार्यकर्ताओं का अंबार लेकिन उनमें उत्साह नहीं..

मोदी के आगे अब सब फीके...

पार्टी का प्रभाव भले ही क्षेत्र के जन-मानस पर दिखाई नहीं देता हो लेकिन मोदी जी का प्रभाव जन-मानस और उनके मन मस्तिष्क पर जबरदस्त दिखाई देता है। पिपरिया में हुई मोदी जी की सभा इस बात का उदाहरण है। सुबह होने वाली मोदी जी की सभा दिन में दो घंटे देरी से शुरू हुई, हवा पानी के कारण प्रशासन जैसा इंतजाम करना चाहता था नहीं कर पाया। लेकिन सभा सफल ही नहीं कामयाब साबित हुई। प्रशासन बधाई का पात्र रहा मोदी जी का क्रेज भी इस समय देखा गया चिलचिलाती धूप में लोग पानी पानी चिल्ला रहे थे मोदी के आते ही जो पानी पानी की जगह मोदी मोदी चिल्लाने लगे। मोदी जी के जाने बाद भी जहां लोगों के आने का तांता नहीं टूटा मोदी को देखने और सुनने को उमड़ने वाली भीड़ चिलचिलाती धूप में अपने नेता को देखने सुनने को खड़ी रही लोगों की भीड़ कुछ नहीं कहकर भी यहां बहुत कुछ कह देती कि मोदी है तो मुमकिन है कुछ गलत तो नहीं..

भाजपा को ब्राह्मण वोटों की जरूरत नहीं या पार्टी बदलने वाला नेता जरूरी नहीं..?

ब्राह्मण बाहुल्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले नर्मदाचंल के सम्माननीय और वरिष्ठ संसदीय नेता पूर्व कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष सुरेश पचौरी भाजपा में शामिल होकर भी प्रधानमंत्री की सभा में शामिल नहीं हुए... भाजपा प्रत्याशी को क्या संसदीय क्षेत्र में ब्राह्मण वोटों की जरूरत नहीं या फिर भाजपा को पार्टी बदल वाले नेताओं की जरूरत नहीं..? यह चर्चा का विषय बन गया। चाहे जो हो इसमें कुछ तो रहस्य है पार्टी में शामिल होकर श्री पचौरी जब दिल्ली गृहमंत्री और पार्टी अध्यक्ष से मुलाकात कर सकते हैं। तो भला चुनावी मौसम में वह भी अपने ही क्षेत्र में प्रधानमंत्री के साथ मंच सांझा करने में परहेज क्यों..?

सरकार क्या हेड़ाऊ के मामले में संज्ञान लेगी..?

झूठे जाति प्रमाण पत्र के आधार पर नौकरी बजा रहे कृषि विभाग के आला अधिकारी ने अगर विभागीय घपले नहीं किए थे तो उसे सस्पेंड करते हुए विभाग ने सात इंक्रीमेंट कैसे रोकें..? यह सवाल आज कृषि विभाग में दबे सुर में उठता है जहां कटनी, छिन्दवाड़ा सहित हरदा में विभागीय घपले करने वाले जेएस हेड़ाऊ की उपस्थिति सरकारी काम-काज पर सवाल खड़े करती है। जाति प्रमाण की जांच कर रहे बीएम सहारे और अजीत केसरी ने जांच में इतनी देरी की उसका लाभ हेड़ाऊ को बनने वाली पेंशन में मिल गया जो जांच दायरे के बाहर भी हो गए। क्यों नहीं सरकार डिप्टी डायरेक्टर ऐग्रिकल्चर हेड़ाऊ के मामले की जांच करने वाले दोनों अधिकारियों को की गई जांच अपने दायरे में लेकर दोनों अधिकारियों को जांच करे ...

कृषि अधिकारी की लापरवाही से सरकार को लाखों का नुकसान तो नहीं...?

न्यूनतम समर्थन मूल्य पर निर्धारित उपार्जन केन्द्रों में

विभागीय गलत निर्णय ने कुछ दिनों की बारिश से लाखों का अनाज गीला करवा दिया और अब भरपाई गेहूं चना खरीदने वाली सोसाइटियों के माथे ठीकरा फोड़ने की योजना चल रही। हवा पानी से होने वाले नुकसानी भरपाई अधिकारियों की तनख्वाह से लेने की बात किसान संगठन के शिवमोहन सिंह ने करते हुए मुद्दे की बात कही है। एक अखबार ने मामले में खासी मेहनत कर सोसाइटियों द्वारा खरीदे अनाज को वेयरहाउस में रखने में करोड़ों का किराया और परिवहन खर्च बचाने का आंकड़ा उजागर कर इस लापरवाही से चौंका दिया। आखिर जिम्मेदार अधिकारी ने समितियों को वेयरहाउस में अनाज खरीदने की जगह खुले में अनाज खरीदने पर अपनी आंखें बंद क्यों रखी थी..? वैसे भी सुनाई दे रहा है कि इस बार जीरो प्रतिशत खाली वाले वेयरहाउस को खरीदी केंद्र बनाने की अनुशंसा की गई थी।

शंभू दरबार की जिम्मेदारी अब ज्येष्ठ पुत्र प्रकाश मुदगल निर्वहन करेंगे

सुबह सवेरे सोहागपुर। देश के विख्यात गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल जी के पंचतत्व में विलीन हो के उपरांत विगत दिवस शंभू दरबार में उनकी आत्मा शांति त्रयोदशी श्राद्ध भंडारे का आयोजन पलाश परिसर में आयोजित किया गया।इस अवसर उनके देश के कोने-कोने से पहुंचे उनके हजारों अनुयायियों ने गहरा शोक व्यक्त किया। इसके साथ स्थानीय नागरिकों की भी भारी उपस्थिति रही। उल्लेखनीय है कि स्वगीर्य पंडित मनमोहन मुदगल महराज ने आध्यात्मिक, अदृश्य अलोकिय शक्तियों के माध्यम से पीड़ितों की निस्वार्थ भाव उनका निवारण करके खियाति प्राप्त करके अपने हजारों अनुयायियों बना लिए थे। ज्ञातव्य है कि आपने प्रदेश ही नहीं छत्तीसगढ़ में भी करीबन 27 विभिन्न यज्ञों का आयोजन किया था।

लघु उद्योग एवं व्यापारियों के लिए मोदी सरकार ने दी है कई योजनाएं : चैतन्य कश्यप

जल्द शुरू होगी रेलवे लाइन, विकास कार्यों के लिए हमेशा प्रयासरत रहूंगा : सांसद छतरसिंह दरबार

धार। मध्य प्रदेश के लघु एवं सूक्ष्म उद्योग मंत्री चैतन्य कश्यप मनावर के प्रबुद्धजन सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत जिला पंचायत सदस्य शिवराम कन्नौज में स्वागत भाषण से की। इसके पश्चात कैबिनेट मंत्री द्वारा पिछले 10 वर्षों में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकाल पर विस्तार से चर्चा करते हुए उद्योग मंत्री द्वारा मुद्रा लोन और लघु उद्योगों पर सरकार की लगातार नई योजनाओं की जानकारी दी। भाजपा द्वारा हाल ही में जारी किए गए चुनावी वचन पत्र पर भी विस्तार से जानकारी देते हुए मंत्री कश्यप ने कहा, कि लगातार हो रहे औद्योगिक क्रांति के चलते व्यापारियों को तो फायदा हो ही रहा है। इसके साथ-साथ किसानों की भी आय बढ़ी है। पूरे देश में मोदी की गारंटी को कोई गलत नहीं साबित कर सकता है सरकार द्वारा किए गए हर बड़े छोटे वादों पर सरकार मजबूती से अपने वचनों को पूरा कर रही है। कश्मीर में धारा 370 हटाकर आम नागरिक को भी जमीन का अधिकार दिलाया गया है। तीन तलाक जैसे बिल को लाकर सभी महिलाओं को समानता का अधिकार मिला है। वर्षों से चल रहे राम मंदिर के विवाद को सरकार ने न्यायीक रूप से कोर्ट के आदेश पर ही निर्णय के पश्चात निर्माण किया है।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना पर जानकारी देते हुए बताया, कि पहले 4 करोड़ आवास निर्माण हो चुके हैं, और अब सरकार 3 करोड़ आवास का निर्माण और करने जा रही है। कश्यप ने कहा कि पूर्व में इंदिरा आवास योजना के तहत जो अनुदान राशि मिलती थी। वह कहां गायब होती थी किसी को जानकारी नहीं। पहले केवल 60 हज़ार रुपए स्वीकृत किए जाते थे। जिसमें से भी बीच में लोग कमीशन मार लेते थे। परंतु अब सरकार द्वारा सीधे हितग्राही के खाते में पैसा डाला जाता है।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में धार जिला सांसद छतर सिंह दरबार ने अपने उद्बोधन में कहा कि उनके 5 वर्षीय कार्यकाल में कई विकास कार्य हुए। जिसमें गणेश घाट के लिए निर्माण स्वीकृत करवाने से लेकर रेल लाइन धार जिले में लाने, मेडिकल कॉलेज, टेक्सटाइल उद्योग जैसे कई कार्य है। और उनके कार्यकाल पूरे होने के पश्चात भी वह लगातार क्षेत्र में विकास कार्यों के लिए प्रयासरत रहेंगे। भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी ने अपने उद्बोधन में कहा की पूर्व की सरकारें केवल अपने मंत्रियों का भला करती थी। भारतीय जनता पार्टी की सरकार में अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के जीवन को खुशहाली से भरने का काम किया जा रहा है। पूर्व जिला अध्यक्ष रमेश धड़ीवाल ने भी केंद्र सरकार की योजनाओं और पार्टी की स्थापना से लेकर आज तक के जन कल्याण के विषयों पर प्रकाश डाला। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि प्रबुद्धजन सम्मेलन में विधानसभा प्रभारी अशोक जैन, संयोजक मोहन भायल, सहसंयोजक कपिल सोलंकी, अजय पाटीदार, व्यापारी प्रकोष्ठ जिला संयोजक मोहित तांतेड़ आदि सदस्य मंचासीन रहे। कार्यक्रम का संचालन भाजपा के विधानसभा मीडिया प्रभारी एवं मंडल उपाध्यक्ष अंकित शुक्ला द्वारा किया गया एवं आभार जिला उपाध्यक्ष सौरभ शर्मा ने व्यक्त किया।

सरस्वती शिशु मंदिर सोहागपुर में पहला विद्यालयीन तरणताल आरंभ

सुबह सवेरे सोहागपुर। विघा भारतीय मध्य प्रांत के तत्वावधान में संचालित सरस्वती शिशु मंदिर सोहागपुर में प्रथम तरणताल शुभारंभ अध्यक्ष कन्नूलाल अग्रवाल, सचिव राजा भैया पटैल, व्यवस्थापक कृष्णा पालीवाल, प्राचार्य अशोक दुबे आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ।इस अवसर पर अतिथियों ने मां सरस्वती पूजन करके तरणताल का शुभारंभ किया। प्राचार्य अशोक दुबे ने बताया कि नगर के विधालय में उक्त तरणताल पहला है।यह विद्याभारती योजना में पंचकोष शिक्षा के अंतर्गत भैया बहनों के, लिए तरणताल (स्विमिंग पूल) की शुरुआत शारीरिक विकास के अन्तर्गत प्रारम्भ किया गया है। आपने आगे बताया कि तरणताल से अन्नमय कोष का विकास होता है। वहीं भैया बहनों के शारीरिक विकास में सहायक होगी। इसके साथ तैराकी प्रशिक्षण भी देने का प्रयास किया जाएगा। जिससे भैया बहनों का मनोबल बढ़ने के साथ व्यक्तित्व विकास के लिए यह लाभकारी सिद्ध होगा।

इस अवसर पर विद्यालय के भैया, बहनों ने तरणताल में अति आनंद लिया। इस अवसर पर शाला की दीदियां एवं आचार्य उपस्थित थे। वहीं प्राचार्य ने अभिभावक भाजपा नेता विशाल गोलानी एवं दिशा गोलानी को भी इस अवसर पर आमंत्रित किया था।

लोकसभा चुनाव में शत-प्रतिशत मतदान हेतु मतदाता पर्ची का वितरण

सुबह सवेरे सोहागपुर। जिला कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सोनिया मीना ने लोकसभा चुनाव में शत-प्रतिशत मतदान कराने के संकल्प को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसी तारतम्य में लोकसभा निर्वाचन 2024 के अंतर्गत बीएलओ के द्वारा घर-घर पहुंचकर मतदाता पर्चियां का वितरण मतदान प्रतिशत बढ़ाने के उद्देश्य को लेकर समय से पूर्व वितरित की जारी हैं। बीएलओ चंद्रप्रकाश साहू ने प्रशासनिक अधिकारियों की मतदाता पर्ची का वितरण कार्यालय में जाकर किया।

डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरांत विशाल शोभायात्रा निकाली

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। डॉ. भीमराव अंबेडकर जन्मोत्सव समिति के तत्वावधान में नवीन बस स्टैंड परिसर में डॉ भीमराव अंबेडकर जन्मोत्सव समिति 133वीं जयंती के हर्षोल्लास के मनाई गई। कार्यक्रम राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल जाटव, सामाजिक नेता रमेश बामने, अखिल भारतीय राष्ट्रीय महामंत्री शहीद ऊधम सिंह आर्मी अनिल आर्य, वकील गुमान सिंह मामले इटारसी, समाजिक नेता अजय अहिरवार, समाजिक नेता अशोक अहिरवार नर्मदापुरम, कांग्रेस नेता पुष्पराज सिंह पटैल, वकील बी के शर्मा आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ भीमराव अम्बेडकर जन्मोत्सव समिति के अध्यक्ष गणेश अहिरवार विशेष रूप से उपस्थित थे । इस अवसर पर आदिवासियों बालिकाओं ने आदिवासी नृत्य करके उपस्थित जनों की तालियां बटोरीं। कार्यक्रम में समाज की शाला में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं, नेपाल आयोजित खेल में भाग लेने वाली प्रतिभाओं, बल्ड डोनेशन, एम्बुलेंस कर्मचारियों सहित 97 प्रतिभाओं को सम्मानित करके स्मृति चिन्ह अतिथियों ने भेंट किए।

अतिथियों ने कार्यक्रम को संबोधित करते बाबा भीमराव अंबेडकर के कार्यों का विस्तृत सारगर्भित वर्णन किया। संचालन कैलाश खुराना ने किया। आभार व्यक्त गणेश अहिरवार ने व्यक्त किया।

कार्यक्रम के उपरांत विशाल शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें समाजिक युवा बन्धु बैंड बाजों की धुन पर नृत्य करते चल रहे थे। शोभायात्रा नवीन बस स्टैंड से होकर रघुवंशीपुरा, कन्या शाला, बिहारी चौक, कमानिया गेट, मुख्य बाजार, पलकमती राज्य मार्ग होकर न्यायालय चौराहे पर विर्सजित हुई। गोपाल अहिरवार , सुमित्रा देवी अहिरवार,पूजा चौधरी, हेमलता चौधरी, चंदनसिंह भाईजी अहिरवार, पातिराम अहिरवार ,भगवान अहिरवार ,नीमचंद अहिरवार, सीताराम अहिरवार,हेमराज अहिरवार,गोपाल खरे, वीरसिंह अहिरवार ,गौतम लोगे, बालकिशन दिवाकर, धनसिंह अहिरवार ,राहुल धौलपुरिया ,हरिप्रसाद धौलपुरिया,राजा घारू,श दीपक दोहरे, दिनेश खुराना, देवीसिंह खुराना, बीनेश बौद्ध ,मुकेश टेकाम,राजेंद्र उइई, गुलाबसिंह उइके ,अरविंद अहिरवार ,मदन बामने, संतोष अहिरवार, ठाकुरदास अहिरवार, हरिदास खुराना,प्रदीप पवार, राजकुमार अहिरवार ,संतोष तिलथे, हरिदास दिवाकर, राकेश अहिरवार, अभिषेक अहिरवार आदि उपस्थित थे।

राइट क्लिक

'रेवड़ी पैक' घोषणा पत्र और मतदाता के सामने विवेकपूर्ण मतदान की चुनौती

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

भाजपा और कांग्रेस सहित कुछ राजनीतिक दलों के 18वीं लोकसभा चुनाव के लिए घोषणा पत्र जारी हो चुके हैं। कुछ के होने वाले हैं और बाकी कुछ के लिए घोषणा पत्र जारी करने से ज्यादा चिंता अपना राजनीतिक वजूद बचाने की है। सरसरी तौर पर देखा जाए तो सभी पार्टियों के चुनाव घोषणा पत्र में रेवड़ी कल्चर का अधिकाधिक विस्तार और होड़ है। बल्कि यूं कहें कि अपने वैचारिक फ्रेम में रेवड़ी संस्कृति को फिट करने और उसके औचित्य को जताने की पुरजोर कोशिश है। अब तक के अनुभव को देखते हुए कहा जा सकता है कि जिस पार्टी का घोषणा पत्र जितना लोक लुभावन और 'रेवड़ी पैक' होता है, उसके सत्ता में आने की संभावना उतनी ही कम होती है। इसका सीधा अर्थ यह है कि जिस पार्टी का राजनीतिक जनाधार जितना कम होता है, उसकी सियासी शिगूफेबाजी उतनी ही ज्यादा होती है। अगर आप इसी पैमाने पर सारे राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों की टेस्टिंग करें तो सक्च्चाई समझ आ जाएगी। इसी के साथ यह सवाल भी नत्थी है क्या चुनावों में मतदाता घोषणा पत्र देख- सुनकर भी वोट देता है या फिर मतदान का हरेक का अपना एक ईको सिस्टम होता है, जिसके अनुरूप वोटर वोट डालता है? वोटर के सामने बड़ी चुनौती यही है कि वह विवेकपूर्ण ढंग से मतदान कैसे करे?

देश के चुनाव नतीजों के ट्रेंड को समझें तो बीते कुछ वर्षों से मतदाता वैचारिक आग्रह- दुराग्रहों और शाब्दिक लफ्फाजी के झांसे में आए बगैर मतदान के लिए उन बातों को प्राथमिकता देता ज्यादा लगता है, जो उसे किसी न किसी न रूप में सीधा फायदा पहुंचाती हैं फिर वह चाहे नकदी के रूप में हों, अवसर के रूप में हो या सुरक्षा अथवा आश्वस्ति के रूप में हो। वह जान चुका है कि चुनाव घोषणा पत्र हर चुनावी सावन में नए सिरे से किया जाने वाला राजनीतिक सुंदरकांड का पाठ है, जिसका व्यवहार के स्तर पर न तो कोई खास महत्व है और न ही वो पार्टियां भी चुनाव बाद इसकी धूल झाड़ती हों, जो जोर-शोर से इसे हर चुनाव की बेला में जारी करती हैं।

अंग्रेजी में चुनाव घोषणा पत्र को 'मेनीफेस्टो' कहा जाता है। डिक्शनरी में इसका अर्थ ऐसे राजनीतिक बयान से है, जो सत्ता में आने पर सम्बन्धित दल के कार्यक्रमों की रूप रेखा पेश करता हो, जिसमें सियासी दल की विचारधारा, अभिमत, कार्य योजना, दृष्टि और एप्रोच की झलक मिलती हो। इसे जानकर मतदाता यह तय कर सके कि किसे वोट देना बेहतर होगा, कौन देश अथवा प्रदेश को ठीक से चला सकता है, किसमें एक आम नागरिक की मूलभूत समस्याओं का निदान कर उसकी जिंदगी सुलभ बनाने की क्षमता और इच्छाशक्ति है। लेकिन मतदाता हमेशा इसी आधार पर वोट दे, यह जरूरी नहीं है। वह प्रसंगानुरूप प्राथमिकताएं तय करके भी कई बार वोट करता है। इसीलिए एक बार जारी घोषणा पत्र राजनीतिक पार्टियों को भी अगले चुनाव में याद नहीं रहता। वो जनभावनाओं और अपेक्षाओं को रेवड़ियों के माध्यम से राजनीतिक दोहन का अधिकाधिक प्रयास करते दिखते हैं। क्योंकि घोषणा पत्रों की पुरानी शब्दावलियां और जुमले अब अपने अर्थ खो चुके हैं। (कुछेक राजनीतिक दल अभी भी उसी से चिपके हुए हैं, वो अलग बात है)। ऐसे में मतदाता को लुभाने के लिए दरकार है नए जुमलों, प्रतीकों और प्रलोभनों की। इसकी छाया हमे खुद घोषणापत्रों की वैकल्पिक संज्ञाओं में देखने को मिलती है। ज्यादातर पार्टियों ने घोषणा पत्रों के राजनीतिक पर्यायवाची खोज लिए हैं। मसलन न्याय पत्र, संकल्प पत्र, वचन पत्र, दृष्टि पत्र, गारंटी पत्र आदि। दिलचस्प बात यह है कि जैसे जैसे घोषणापत्रों में गारंटियों का पलड़ा भारी होता जा रहा है, विचार पक्ष का स्पेस उतना ही कम होता जा रहा है। घोषणा पत्र जारी करने में भी प्रतीकात्मक राजनीति का पूरा खयाल रखा गया है। मसलन कांग्रेस ने पूर्व केन्द्रीय मंत्री व दलित नेता बाबू जगजीवन राम के जन्म दिन पर घोषणा पत्र जारी किया तो भाजपा ने संविधान निर्माता डॉ.बाबा साहब अंबेडकर की जयंती पर अपना घोषणा पत्र जारी किया।

इस बार चुनाव घोषणा पत्र में कांग्रेस का न्याय पत्र चर्चा में है। इसमें 5 न्याय और 25 गारंटियों की बात कही गई है। कहा जा रहा है कि यह घोषणा पत्र, वर्क, वेल्थ और वेलफेयर (काम, धन और कल्याण) के तत्वों पर आधारित है। इस घोषणा पत्र की भावना अच्छी है, लेकिन वादे हवाई ज्यादा हैं। कांग्रेस के घोषणा पत्र में एक बड़ा वादा सबकी महालक्ष्मी योजना का है। इसके तहत गरीब परिवारों को सीधे एक लाख रुपये नकद देना का वादा है। देश में बीपीएल परिवारों की संख्या करीब 30 लाख है। प्रत्येक परिवार को हर साल 1 लाख नकद देने के लिए सालाना 3 खरब रूपए चाहिए। ये कहां से आएंगे, स्पष्ट नहीं है। दूसरी बात यह है कि कांग्रेस व अन्य विरोधी पार्टियां मोदी सरकार द्वारा 80 करोड़ गरीब परिवारों को मुफ्त राशन योजना देने की आलोचना इस आधार पर करती हैं कि सरकार फ्री अनाज के बजाए काम दे। अब इस 1 लाख रू. को किस श्रेणी में रखा जाएगा। वैसे देश के पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम का दावा है कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की आर्थिक नीतियों की वजह से देश में 10 सालों में 24 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकले थे। वहीं अब मोदी सरकार का दावा है कि बीते दस साल में 24.8 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकले (नीति आयोग की रिपोर्ट)। अगर दोनों को सही मान लिया जाए तो बीते 20 साल में कुल 50 हजार करोड़ आबादी जो कि कुल आबादी का एक तिहाई है, गरीबी रेखा से बाहर आ चुकी है। तो फिर सरकार किन 80 करोड़ बीपीएल परिवारों को मुफ्त राशन दे रही है?

इसी तरह कांग्रेस के न्याय पत्र में 30 लाख युवकों को सरकारी नौकरी देने की बात है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार आज देश में केन्द्र सरकार के पास कुल नौकरियां ही 40 लाख हैं। इनमें भी 10 लाख पद खाली हैं। ये भर भी दिए जाएं तो बाकी 20 लाख को सरकारी नौकरी कैसे मिलेगी, यह सोचने की बात है। घोषणा पत्र में एक अहम वादा न्यूनतम मजदूरी बढ़ाकर 400 रू. करने और आरक्षण की अधिकतम सीमा 50 फीसदी से बढ़ाने संविधान संशोधन करने का भी है, हालांकि यह जाति जनगणना के बाद ही संभव है। कांग्रेस जाति जनगणना का वादा भी कर रही है, जिसकी वजह से खुद कांग्रेस के अगड़े नेताओं में भारी खदबदाहट है। इसके अलावा कांग्रेस के घोषणा पत्र में सत्ता में आने पर संवैधानिक संस्थाओं की आजादी 'बहाल' करने तथा इलेक्टोरल बांड, पीएम केयर्स फंड, सरकारी सम्पत्तियों को बेचने तथा रक्षा सौदों की डील की जांच करने के भी वादे किए किए हैं। हालांकि ये मतदाता को कितना प्रभावित कर पाएंगे, कहना मुश्किल है। साथ ही कृषि उत्पादो के लिए एमएसपी गारंटी कानून लाने का वादा भी पूरा करना आसान नहीं है। गौरतलब है कि कांग्रेस ने 2019 के आम चुनाव घोषणा पत्र गरीब परिवारों को, हर महीना 6000 रुपये देने का वादा किया था। इसी के साथ देशभर के लिए 25 लाख रुपए तक फ्री इलाज की योजना (हालांकि राजस्थान में राहुल गांधी ने 50 लाख रु. तक के फ्री इलाज की घोषणा की थी, इसके बाद कांग्रेस वहां हार गई थी)।

उधर भाजपा के 'संकल्प पत्र' में किसी नई लोकलुभावन योजना का वादा नहीं है, सिवाय आयुष्मान योजना में बुजुर्गों को सम्मिलित करने के। पार्टी आत्म संकल्प और आत्ममुग्धता के झूले में झूल रही है। चुनाव में भाजपा मुख्यतः अपने काम के आधार पर ही वोट मांग रही है। पार्टी मान रह है कि मोदी का नेतृत्व, राम मंदिर का निर्माण और 80 करोड़ लोगों को फ्री राशन चुनाव जीतने के ऐसे शर्तिया नुस्खे हैं, जिनके परे जाकर मतदाता कम ही सोचेगा। अलबत्ता दक्षिण भारत में लड़ा जरा अलग तरह की और ज्यादा कठिन है। भाजपा देश में समान नागरिक संहिता लागू करने पर आमादा है। उसके घोषणा पत्र में देश के स्वर्णिम भविष्य के सपने ज्यादा हैं। वह खुद भी उम्मीदों की बुलेट ट्रेन में सवार है। पार्टी 'एक देश, एक जनादेश' पर कायम है। खास बात यह है कि इस बार बीजेपी का सारा प्रचार मोदी केन्द्रित और मोदी निर्भर ही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी अब केवल अपनी ही गारंटियों, काबिलियत और दूरदर्शिता की तारीफ करते नहीं थकते। इसका मतदाता पर कैसा असर होगा, यह चुनाव नतीजों से पता चलेगा। बावजूद इन तमाम बातों के बीजेपी के घोषणा पत्र में यह सावधानी अंतर्निहित है कि सत्ता में लौटने पर कोई वादा उसे भारी न पड़ जाए। विकास की दिशा वही रहे, जो उसने तय कर रखी है।

उधर कुछ क्षेत्रीय पार्टियों ने अपने चुनाव घोषणा पत्रों में ऐसी बातें भी शामिल की हैं, जो उनकी राष्ट्रीय महत्वाकांक्षों को परिलक्षित करती हैं। साथ में रेवड़ियां तो हैं ही। राष्ट्रीय जनता दल ने वादा किया है कि इंडिया गठबंधन के सत्ता में आने पर बिहार में 200 यूनिट फ्री बिजली दी जाएगी। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा और 1 लाख 60 हजार करोड़ का स्पेशल पैकेज दिया जाएगा। राजद का एक बड़ा वादा देश में 1 करोड़ लोगों को सरकारी नौकरी देने, 30 लाख खाली पदों को भरने तथा 70 लाख नए पद सृजित करने का है। यह प्रक्रिया 15 अगस्त से शुरू भी हो जाएगी। यह बात अलग है कि आज देश में केन्द्र व राज्य सरकारों की मिलाकर कुल नौकरियां (सार्वजनिक उपक्रम भी मिला लें) सवा करोड़ से ज्यादा नहीं हैं। खाली पद करीब भी 25 लाख से ज्यादा नहीं होंगे। राजद कुल जमा 23 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। इसी तरह डीएमके के घोषणा पत्र में महिलाओं को प्रति माह 1 हजार रू. देने व तमिलनाडु को नीट से छूट देने और पेट्रोल डीजल के दाम घटाने का वादा है। पार्टी ने सीएए कानून रद्द करने तथा समान नागरिक संहिता लागू न करने का वादा किया है। माकपा ने भारत के परमाणु निरस्त्रीकरण का वादा भी किया है। विश्व शांति के आग्रह से उपजे इस वादे में देश को सैन्य शक्ति के मामले में 1962 वाले दौर में ले जाने का मंतव्य ज्यादा झलकता है। मजेदार बात यह है कि इंडिया गठबंधन में शामिल माकपा ने कुछ मुद्दों पर जैसे कि कश्मीर में धारा 370 हटाने के मुद्दे पर सहयोगी कांग्रेस को कुछ मुद्दों पर फ्रेंडलीघेरा'भी है। एक समय था जब कांग्रेस और कम्युनिस्ट एक दूसरे के राजनीतिक दुश्मन हुआ करते थे। वामपंथी इतिहासकार मृदुला मुखर्जी ने एक लेख में बताया था कि देश के पहले आम चुनाव में कांग्रेस का घोषणा पत्र इसी चिंता पर आधारित था कि कम्युनिस्टों से मुकाबला कैसे किया जाए। इसी तरह सपा के घोषणा पत्र में समाजवादी पार्टी के घोषणा पत्र में जाति जनगणना,सबको न्याय, फ्री शिक्षा, महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण, खाली पड़े सरकारी पदों पर भर्ती, किसान कर्जमाफी व रक्षा क्षेत्र को मजबूत करने का वादा है। बसपा सुप्रीमो मायावती अपने वादे में पश्चिमी उत्तर प्रदेश को अलग राज्य बनाने की पैरवी कर रही हैं। तृणमूल कांग्रेस ने पश्चिम बंगाल में लागू 'लक्ष्मीर भांडार', कन्याश्री तथा स्वास्थ्य साथी योजना पूरे देश में लागू करने की बात कही है। खास बात यह है कि दोनो प्रतिदंद्वी राजनीतिक दलों के गठबंधनों का कोई समन्वित घोषणा पत्र चुनाव में नहीं है। लिहाजा ये सभी सत्ता की लड़ाई स्वार्थ जनित शस्त्रास्त्रों से ही लड़ रहे हैं। मतदाता के सामने चुनौती यह है कि वह रेवड़ियों, हवाई वादों और जिंदगी से जुड़े मुद्दों के बीच किसको तरजीह दे। देश को, लोकतांत्रिक संस्थाओ को, धर्म या जाति को अथवा अपने हाथ और पेट को?

प्रदेश के कई जिलों में ओले और आंधी का अलर्ट

जबलपुर-छिंदवाड़ा समेत 12 जिलों में बारिश के आसार ; रायसेन में भीगा गेहूं

भोपाल। मध्य प्रदेश में बारिश का दौर सोमवार को भी जारी रहेगा। मौसम विभाग ने सिवनी और सागर में दोपहर बाद आकाशीय बिजली के साथ ओले और आंधी का अलर्ट जारी किया है। जबलपुर, भिंड, छिंदवाड़ा, विदिशा समेत 12 जिलों में हल्की बारिश का अनुमान जताया है। इसके बाद मौसम साफ हो जाएगा। दिन के टेम्प्रेचर में 2 से 3 डिग्री तक की बढ़ोतरी हो सकती है। एक सप्ताह बाद फिर से एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव हो सकता है। वैज्ञानिक प्रमेंद्र कुमार ने बताया कि वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन की वजह से प्रदेश में स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव रहा। इस वजह से तेज आंधी चली, ओले गिरे और बारिश भी हुई। सोमवार को भी सिस्टम का असर रहेगा, लेकिन अब यह कमजोर हो गया है।

सबसे ज्यादा बारिश अशोकनगर जिले के चंदेरी में

मध्य प्रदेश में पिछले 24 घंटे के दौरान अशोकनगर, श्योपुरकलां, शिवपुरी, बैतूल, दमोह, बालाघाट, सागर, टीकमगढ़, मंडला, छतरपुर, शहडोल और सिवनी के 21 शहर और कस्बों में बारिश हुई। सबसे ज्यादा बारिश अशोकनगर जिले के चंदेरी में सवा इंच बारिश दर्ज की गई। सागर के रेहटी में पौन इंच पानी गिरा। सिवनी समेत कई जिलों में आंधी भी चली। सिवनी में रफ्तार 46 किलो मीटर प्रतिघंटा रही। अशोकनगर में 37 किमी, नीमच, दमोह में 35 किमी, मंडला में 33 किमी, शिवपुरी, सिवनी, सागर और छिंदवाड़ा में 30 किमी प्रति घंटा रफ्तार रही। सिवनी और सागर में दोपहर बाद आकाशीय बिजली के साथ ओले और आंधी का अलर्ट मौसम विभाग ने जारी किया है। हवा की रफ्तार 60 किमी प्रतिघंटा तक हो सकती है। बैतूल, छिंदवाड़ा, मंडला और बालाघाट में भी दोपहर के समय बिजली चमकने के साथ हल्की गरज के साथ बारिश होने की संभावना है। भिंड, दतिया, विदिशा, रायसेन, जबलपुर, मंडला, डिंडोरी, अनूपपुर और बालाघाट में गरज-चमक और हल्की बारिश हो सकती है। प्रदेश में 8 दिन से आंधी, बारिश और ओले गिरने का दौर जारी है। 7 अप्रैल से ही प्रदेश में कहीं हल्की तो कहीं तेज बारिश हो रही है। वहीं, आंधी चलने के साथ ओले भी गिर रहे हैं। सिस्टम की एक्टिविटी की वजह से रविवार को भी कुछ जिलों में हल्की बारिश हुई।

खजुराहो में होगी राहुल-अखिलेश की संयुक्त सभा, रोड शो

इंडिया अलाइंज ने एआईएफबी उम्मीदवार को समर्थन दिया, कांग्रेस ने जारी किया लेटर

भोपाल। सपा-कांग्रेस के समझौते में दी गई खजुराहो लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार का नामांकन निरस्त हो गया था। इसके बाद इस सीट पर INDI अलाइंज का उम्मीदवार ही नहीं था। अब कांग्रेस ने इस सीट पर ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक (AIFB) के उम्मीदवार को समर्थन का ऐलान किया है। समाजवादी पार्टी पहले ही इस सीट पर समर्थन का ऐलान कर चुकी है। कांग्रेस ने आज समर्थन का औपचारिक ऐलान किया है। भोपाल में पीसीसी में कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक ने कहा, राजनीतिक प्रतिबद्धता समान होने के कारण हम समर्थन दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि खजुराहो में अखिलेश यादव और राहुल गांधी की संयुक्त सभा का प्रस्ताव भेजा जाएगा। इस मौके पर ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक के प्रदेश अध्यक्ष जंग बहादुर सिंह गिल और समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. मनोज यादव यहां मौजूद थे। खजुराहो सीट में चुनाव प्रचार को लेकर मुकेश नायक ने कहा- खजुराहो

लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव और राहुल गांधी की संयुक्त सभा का प्रस्ताव एमपी की ओर से भेजा जाएगा। दोनों नेताओं की ओर से सहमति मिलने के बाद संयुक्त रूप से विशाल जनसभा आयोजित की जाएगी। मुकेश नायक ने कहा- खजुराहो लोकसभा सीट को लेकर जो गतिरोध उत्पन्न हुआ था। वह खत्म हो रहा है इंडिया गठबंधन के घटक दल एआईएफबी के उम्मीदवार राजा भैया प्रजापति जो कि रिटायर्ड आईएएस है। उनको कांग्रेस पार्टी और इंडिया अलाइंज की ओर से समर्थन दिया गया है। इस मौके पर आज एआईएफबी के प्रदेश अध्यक्ष जंग बहादुर सिंह गिल और समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ मनोज यादव यहां मौजूद हैं। फारवर्ड ब्लाक को समर्थन देने का ऐलान करते वक्त अच्छा लग रहा है क्योंकि, 1939 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस जिन्होंने नारा दिया था तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा ऐसे महान सपूत ने इस दल की स्थापना की थी। समान विचारधारा और वर्तमान परिस्थितियों में लोकतंत्र को बचाने की जद्दोजहद, राजनीतिक प्रतिबद्धता समान होने के कारण हम समर्थन दे रहे हैं जब समाजवादी पार्टी से इस विषय में बातचीत हुई वह शुरू से ही इसके लिए तैयार थे। उन्होंने सहर्ष अपनी सहमति जारी कर दी। इसलिए अब आरबी प्रजापति इंडिया गठबंधन के संयुक्त उम्मीदवार होंगे। अन्य घटक दल उनकी पूरी ताकत के साथ मदद करेंगे।

परिक्रमा

भाजपा का संकल्प-मोदी की गारंटी और उस पर उठते सवाल

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

भारतीय जनता पार्टी ने ''भाजपा का संकल्प और मोदी की गारंटी'' नामक संकल्प-पत्र में वायदों और गारंटियों की मूसलाधार झड़ी लगा दी है। इसमें 70 वर्ष से अधिक उम्र के सभी बुजुर्गो का फ्री इलाज, गरीबों को 3 करोड़ घरों का वायदा, पांच साल तक राशन देने तथा 10 करोड़ किसानों को पेंशन देने का वायदा किया गया है। मोदी की गारंटी में यूसीसी और एक देश एक चुनाव का वायदा करते हुए भाजपा के चुनावी पिटारे में जो प्रमुख वायदे किये गये उनमें मुद्रा लोन 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख करने, सीसीए के तहत बाहरियों को नागरिकता देते रहने, दिव्यांगजनों को प्रधानमंत्री आवास में प्राथमिकता देना, 6 हजार रुपये की पीएम किसान सम्मान निधि जारी रखने, पेपर लीक के खिलाफ सख्त कानून बनाने तथा बुलेट ट्रेन का विस्तार पश्चिम के अलावा पूरब, उत्तर और दक्षिण भारत में करना शामिल है इसके अलावा ट्रांसजेंडर को आयुष्मान योजना में लाने, नये एम्स और मेडिकल कालेज के माध्यम से सीटें बढ़ाना भी शामिल है।

संकल्प-पत्र में गर्वनेंस को 14 सेक्टरों में बांटा गया है। भारत के अन्य देशों से संबंध, आंतरिक व बाहरी सुरक्षा, समृद्ध भारत, ईज आफ लिविंग, विरासत का विकास, गुड गर्वनेंस, सुशासन, स्वस्थ भारत, शिक्षा, खेल, सभी सेक्टरों का विकास, इनोवेशन व टेक्नालाजी और पर्यावरण को भी रखा गया है। आर्थिक रुप से कमजोर लोगों को गांव, कस्बों और शहर के हर घर में नल से जल प्रदाय किया जायेगा, रसोई गैस के लिए पीएम उज्जवला योजना जारी रहेगी, पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत हर महीने फ्री बिजली दी जायेगी, गांवों की तीन करोड़ महिलाओं को लखपति बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है तथा वूमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप को सर्विस सेक्टर से जोड़ा जायेगा, कामकाजी महिलाओं के

लिए हास्टल का निर्माण किया जायेगा। फसल बीमा योजना में नुकसान की जांच के लिए आधुनिक टेक्नीक का इस्तेमाल किया जायेगा। श्रीअन्न को बढ़ावा देकर भारत को दुनिया का न्यूट्री हब बनाया जायेगा तथा नेशनल फार्मिंग को बढ़ावा दिया जायेगा। फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि और किसान सम्मान निधि योजना जारी रखने की बात वायदों में की गयी है।

रविवार 14 अप्रैल को पिपरिया में छिंदवाड़ा, होशंगाबाद के प्रत्याशियों के समर्थन में प्रधानमंत्री ने मोर्चा संभालते हुए जोर देकर कहा कि यह बाबा साहब का संविधान ही है जिसकी वजह से मैं पीएम बना हूं। गांधी परिवार पर जमकर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि जैसे ही गरीब घर का बेटा प्रधानमंत्री बना तो कांग्रेस अफवाह फैलाने लगी, मोदी आया है तो संविधान और लोकतंत्र को खतरा पैदा हो जायेगा। कांग्रेस वालों आपको पता नहीं है कि ये बाबा साहब का संविधान है जिसकी वजह से ही मोदी यहां पर है और यही बाबा साहब का संविधान है जिसके कारण आज देश की राष्ट्रपति आदिवासी परिवार की एक बेटी है। उनका कहना था कि हमने बाबा साहब को सिर्फ विचारों तक सीमित नहीं रखा, आप मोबाइल से जो डिलिटल पेमेंट करते हैं न उसका नाम भीम यूपीआई है, ये भीम यूपीआई बाबा साहब के नाम पर रखने की कोशिश है। राहुल गांधी को निशाने पर लेते हुए मोदी ने कहा कि कांग्रेस के शहजादे ने घोषणा की है कि एक झटके में देश की गरीबी मिटा दूंगा, यह शाही जादूगर इतने साल तक कहां छिपा था, इनको एक झटके वाला मंत्र मिल गया है, ऐसे दावे करते हैं और हंसी के पात्र बन जाते हैं।

वहीं दूसरी ओर मोदी की गारंटी पर सवाल उठाते हुए कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा है कि भाजपा के मेनीफेस्टो से दो शब्द गायब हैं महंगाई और बेरोजगारी, लोगों के जीवन से जुड़े सबसे अहम् मुद्दों पर भाजपा चर्चा तक नहीं करना चाहती, युवा इस बार मोदी के झांसे में नहीं आने वाला, अब वह कांग्रेस का हाथ मजबूत कर देश में रोजगार क्रांति लायेगा। वहीं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का कहना है कि भाजपा का संकल्प-पत्र बाबा साहब डॉ. भीमराव आम्बेडकर की जयंती पर जारी किया गया है जो यह बताता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दलित, वंचित, शोषित व सर्वहारा वर्ग के लिए भाजपा सरकार आगे लगातार काम करती रहेगी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा है कि मोदी की गारंटी का मतलब जुमलों की गारंटी है, युवा नौकरी के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं, महंगाई के कारण खाने-पीने के दाम आसमान पर पहुंच गये हैं, मोदी ने दस साल में सिर्फ बेरोजगारी व महंगाई बढ़ाई है।